मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

देश के लिए वास्तविक ख़तरा

"इस समय हमारा देश बहुत ही संकट का सामना कर रहा है। क़दम—क़दम पर रिश्वत देनी पड़ती है। क़दम—क़दम पर दुर्व्यवहार करना पड़ता है। क़दम—क़दम पर इन्सानियत को अपनी ख़ुद्दारी को रौंदना पड़ता है। क़दम—क़दम पर गुलामी की मानसिकता और सीरत का इज़हार करना पड़ता है। अंग्रेज़ों के ज़माने में हम इतने गुलाम न थे, आज ज़हन गुलाम हैं, हमारा ज़मीर गुलाम है, गुलामी की बदतरीन और अस्वभाविक सूरत यह है कि भाई—भाई का गुलाम हो। एक देश के नागरिक एक—दूसरे पर शासन करने लगें और यह समझें कि जिसको मौक़ा मिल जाए उससे फायदा उठाना चाहिए। वह अपने भाई के साथ वह व्यवहार करे जो विदेशी हाकिम हिन्दुस्तान के साथ करते थे।"

हज़रत मौलाना
सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

FEB 19

₹ 10/-

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

शौक़–ए–आख़िरत

आख़िरत बेहतरीन और बाक़ी रहने वाली है

अल्लाह तआला ने इन्सान की ज़िन्दगी के दो मरहले बनाए हैं। एक मरहला उसकी दुनिया की ज़िन्दगी का है और दूसरा मरहला आख़िरत का है और वह मरहला इन्तिहाई दराज़ मुद्दत का और असर रखने वाला मरहला बनाया है। दुनियावी मरहले में ज़िन्दगी मुख़्तसर होती है और वह दरअस्ल इन्सान की ज़िन्दगी गुज़ारने में ख़ैर व शर को जानने के लिये रखी गयी है और कुरआन मजीद में फ़रमाया गया है कि इन्सान एक ज़र्रा बराबर नेकी करेगा तो बाद में वह जांच में आएगी और एक ज़र्रा बराबर ख़िलाफ़ वर्ज़ी का तरीक़ा अख़्तियार करेगा तो उसको भी देखेगा और यह जांच आख़िरत की ज़िन्दगी में नुक़सान और फ़ायदे का ज़रिया होगी और तवील मुद्दत के ज़माने में ज़ाहिर होगी और सज़ा और जज़ा का अमल होगा। दोनों ज़िन्दगियों की मुद्दत में बेइन्तिहा फ़र्क़ है। दुनियावी ज़िन्दगी की मुद्दत आम तौर पर पचास और सौ के बीच होती है। आख़िरत की ज़िन्दगी लाखों और करोड़ों साल से ज़्यादा की और न ख़त्म होने वाली होगी। फ़रमाया गया:

"आख़िरत बेहतरीन और बाक़ी रहने वाली है।" (सूरह आला: १७)

दुनिया की ज़िन्दगी में किये हुए अमल का बदला आख़िरत की लामुतनाही मुद्दत में फैला दिया जाएगा और अच्छाई का बदला बड़ा ज़बरदस्त और बुराई का बदला बहुत सख़्त होगा।

लिहाज़ा समझदारी की बात यह है कि दुनिया की ज़िन्दगी में किये जाने वाले काम को उस हैसियत से देखे कि उसका नतीजा कितना सख़्त देखने को मिलेगा। इसलिए कुरआन व हदीस में इसकी बार–बार ताकीद आयी है कि आख़िरत को मानो और उसकी तैयारी ठीक से करो।

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी कुदुस सिरह ने आख़िरत के ताल्लुक़ से इसको बहुत वज़ाहत से पेश किया है और मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी रह० ने इसको अच्छी तरह तशरीह के साथ मुअस्सिर अंदाज़ से पेश किया और अब इस रिसाले को उन्हीं के ख़ानदान के एक फ़ाज़िल रुक्न अज़ीज़ुल क़द्र मौलवी नईमुर्रहमान सिद्दीक़ी नदवी तख़रीज–ए–हदीस के साथ पेश कर रहे हैं। हज़रत थानवी कुदुस सिरह ने शौक़े वतन का नाम दिया था। इसमें हज़रत दरियाबादी रह० हल्की तरमीम करके शौक़–ए–आख़िरत किया और इसी उनवान से यह रिसाला सामने है। एक साहिब–ए–ईमान बन्दा और बन्दी को मौत जो आख़िरत की ज़िन्दगी में पहुंचने का ज़रिया और लक़ा–ए–रब का पुल है, उससे घबराना नहीं चाहिये, बल्कि अपने रब की मुलाक़ात के शौक़ में उसकी अच्छी तैयारी करनी चाहिये और हदीस शरीफ़ में यह आता भी है कि "जो अल्लाह को मिलने को महबूब रखता है, अल्लाह तआला उससे मुलाक़ात को महबूब रखता है" और एक दूसरी हदीस में दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी की तरह गुज़ारने की तरग़ीब आयी है: "दुनिया में अजनबी या मुसाफ़िर की तरह रहो" अल्लाह तआला ने आख़िरत ही को मोमिन का अस्ल वतन बनाया है। यह शौक़–ए–वतन दरअस्ल शौक़–ए–आख़िरत बल्कि लक़ा–ए–रब है। अल्लाह तआला उसके मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की हिम्मत और तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और अपनी रज़ा व ईनाम नसीब करे।

मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:२ फ़रवरी २०१९ ई० वर्ष:११

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्ररी- दारे अरफ़ात

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुदक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

मौलाना सैयद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०) २

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

असहाब–ए–कहफ़ – एक अध्ययन.....५

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

आईना–ए–नबवी.....७

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

त्याग व समानता क्या है.....९

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अपमान व तिरस्कार का बंधन.....१२

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

ज़कात के कुछ मसले.....१४

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

तिजारत–ए–नबवी स०अ० की नवीयत.....१५

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

पश्चिमी सभ्यता तथा उसकी विशेषताएं.....१८

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

मौलाना सैयद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह0)

अल्लाह के दरबार में.....

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अरफ़ात किरण का यह अंक प्रेस जाने को तैयार था कि अचानक दारे अरफ़ात के प्रबंधक, नदवतुल उलमा के शिक्षा सचिव, राब्ते अबदे इस्लामी आलमी के जनरल सेक्रेटरी, फ़िक्रे इस्लामी के नक़ीब व अलमबरदार हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी के निधन की घटना घटी। उनकी ज़िन्दगी रूहे कुरआन से सरशार थी। ख़ुद तिलावत करते तो सरापा तदब्बुर बन जाते और जब आंख कमज़ोर हुई तो सुनने का मुस्तक़िल नियम बन गया। कई–कई पारे रोज़ाना सुन लेते। लेकिन इसी ज़ौक़ व शौक़ और फ़िक्र व तदब्बुर के साथ नमाज़ों में भी तिलावत के दौरान उन पर एक कैफ़ियत व महवियत तारी हो जाती और वह इसकी गहराइयों में खो जाते।

मौलाना हकीम सैय्यद अब्दुल हयि साहब ने अपनी बड़ी साहबज़ादी का निकाह फूफ़ी ज़ाद भाई के फ़रज़न्द जनाब सैय्यद रशीद अहमद साहब से किया। अल्लाह तआला ने कई साहबज़ादे अता फ़रमाए जिनमें कई कमउम्री में फ़ौत हो गए और इनमें तीन आफ़ताब व माहताब बनकर चमके। हज़रत मौलाना वाज़ेह रशीद नदवी इन तीनों में सबसे छोटे थे। इनमें सबसे बड़े मौलाना मुहम्मद सानी हसनी साहब हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब के मज़ाज बैत व इरशाद हुए। मुसन्निफ़, मुस्लह और शायर थे। गोनागों सिफ़ात व कमालात के हामिल थे। ख़्वातीन के लिए माहाना रिज़वान उस वक़्त जारी किया जब परचे निकालना जान जोखिम में डालने से कम न था। अपने बा कमाल नाना की तरह उम्र की सिर्फ़ चौवन बहारें देखीं। दूसरे भाई हज़रत मौलाना मुहम्मद राबे साहब तीसरे स्थान पर हैं। मुफ़क्किरे इस्लाम रह0 के जानशीन और इस वक़्त मिल्लते इस्लामिया की आबरू हैं। मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सदर नशीं, नदवतुल उलमा के नाज़िम और सैंकड़ों इदारों के सरपरस्त हैं। अल्लाह तआला सेहत व आफ़ियत के साथ उनके साए आतिफ़त को दराज़ फ़रमाए कि उनका वजूद दुनिया के लिए बाइसे ख़ैर व बरकत है।

इन तीन में सबसे छोटे हमारे चचाजान थे। वालिद मालिद मौलाना सैयद मुहम्मदुल हसनी रह0 से दो साल बड़े फूफीज़ाद भाई थे, मगर सगे भाइयों से बढ़कर तीनों भाइयों का मामला ऐसा ही था। मौलाना हकीम सैयद अब्दुल अलीम साहब सबसे मुरब्बी व सरपरस्त थे। उनकी हमशीरा ने अपने तीनों बेटों को तालीम व तरबियत के लिए अपने भाइयों के सुपुर्द किया था। चचाजान उम्र में वालिद साहब के क़रीब थे, इसलिए बचनपन की दोस्ती थी। साथ खेलना, साथ पढ़ना, दादा साहब ने वालिद साहब को घर ही में तालीम दी। उनकी ताकीद थी कि वाज़ेह जो नदवे में पढ़कर आएं, मुहम्मद मियां के साथ मुज़ाकिरा कर लिया करें। अपनी ज़माने का यह लतीफ़ा काबिले ज़िक्र है, क़ससुन नबीयीन अव्वल छप कर आयी, उसमें हज़रत मौलाना ने वालिद साहब को शुरू में ख़िताब किया है, चचाजान ने वालिद साहब से कहा कि मामू जी ने तुम्हारा नाम लिखा, हमारा नहीं लिखा। यह दोनों की नवउर्मी का ज़माना था। वालिद साहब ने किताब खोली, एक जगह इबारत में लिखा हुआ था फ़रमाया देखों तुम्हारा नाम भी है।

मौलाना नदवे से फ़ारिग़ हुए तो अरबी ज़बान उनके लिए मादरी ज़बान की तरह थी, इसमें बड़ा हिस्सा उनके इब्तिदाई दौर के असातज़ा का था जो ताज़ा–ताज़ा मिस्र से पढ़कर आए थे और वह अरबी को ज़िन्दा ज़बान की तरह बराहरास्त पढ़ाते थे। इनमें मौलाना महबूबुर्रहमान साहब अज़हरी भी थे, मौलाना अब्दुल हफ़ीज़ साहब बलियावी से भी मौलाना का ख़ास ताल्लुक़ था। मौलाना की क़ाबिलियत और सलाह का असर असातज़ा पर भी था। कई बार ऐसा हुआ कि मौलाना साहब जो नाबीना थे, सबक़ न पढ़ा सके तो मौलाना वाज़ेह साहब को अपनी जगह बिठा गए। इस ज़माने में मौलाना ने अंग्रेजी पढ़नी शुरू की बाद में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से बाक़ायदा बी.ए. अंग्रेज़ी में किया, फिर घर की शदीद ज़रूरियात को देखते हुए वह दिल्ली चले गए और तक़रीबन बीस साल वहां रेडियो से मुन्सलिक रहे। इस ज़माने में वह हर तरह के लोगों से मिले। मुताले में मज़ीद वुसअत पैदा हुई। हर तरह का माहौल उनको मिला, मगर वह जिस साबित क़दमी के साथ फूल चुनते हुए आगे बढ़ते गए यह उन्हीं की ख़ासियत थी। कभी कांटों में दामन उलझने न दिया। सख़्त से सख़्त

हालात आए मगर उनकी कूव्वते ईमानी में ज़रा जुम्बिश न आयी। हज़रत मौलाना ने उनको ताकीद की थी कि निज़ामुद्दीन से ताल्लुक़ रखना, उन्होंने उसको पूरी तरह निभाया। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब और हज़रत मौलाना ईनामुल हसन साहब के साथ वक़्त लगाने का भी मौक़ा मिला। यह हज़रात भी इन्तिहाई मुहब्बत करते थे। हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह0 से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था और हज़रत शेख़ की भी ख़ास तवज्जे और इनायत भी थी। देहली के क़याम में मुसलसल सहारनपुर भी हाज़िरी का मामूल और बारहा रायपूर हज़रत रायपूरी की ख़िदमत में हाज़िरी की सआदत मिली।

देहली क़याम का अस्ल मक़सद वालिदैन की ख़िदमत व राहत की फ़िक्र थी। वह ज़माना सख़्त इसरत का था। मौलाना के क़यामे देहली से घरवालों को बड़ी राहत हुई। हमारी सबसे छोटी फूफी से मौलाना का अक़्द हो चुका था। वह भी बड़ी साहिबे फ़िक्र और दीनदार ख़ातून थी। ज़िक्र व तिलावत का बड़ा एहतिमाम था। अम्र बिल मारूफ़ व नही अनिन मुनकर पर पूरा अमल था। मुझे याद है कि दोनों में देर–देर तक हालाते हाज़िरा पर बात होती, बुज़ुर्गों का तज़किरा होता तारीख़ के अवराक़ उल्टे जाते और बड़ी फ़िक्र अंगेज़ बातें सामने आतीं। मौलाना देहली में थे लेकिन उनके दायरे फ़िक्र का नशेमन नदवा था। हज़रत मौलाना रह0 को ख़ानदानी ताल्लुक़ की वजह से कुछ तरद्दुद था लेकिन हज़रत शेख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह0 के इसरार पर नदवतुल उलमा में उनका तक़र्रुर हुआ। ख़ुद उन्होंने जिस तरह शुरू से तालीम पायी थी और फिर मिस्र के सफ़र और अरबी से बराहे रास्त गहरे ताल्लुक़ की वजह से मौलाना ने नदवे में इन तर्जबात से फ़ायदा उठाया, उनके अन्दर शौक़ था कि तलबा में वह सलाहियत मुन्तक़िल की जाए। वह लगे–बंधे तरीक़े पर पढ़ाने के क़ायल न थे। उन्होंने नए तजुर्बात से तलबा को फ़ायदा पहुंचाया। नदवा की फ़िज़ा पर उसका असर पड़ा और उस दौर के उनके शार्गिद ख़ास तौर पर उस दौर को याद करते हैं। यह सिलसिला आख़िर तक रहा। न जाने कितने तलबा जो मायूसी का शिकार हो जाते वह मौलाना की फ़िक्र व तवज्जे और शफ़क़त व मुहब्बत से अपने अंदर की उमंग महसूस करते और इनमें न जाने कितने इल्म व फ़िक्र के मैदान में चमके और वह आज तक मौलाना के लिए रुत्बुल शान हैं।

हिम्मत अफ़ज़ाई चचाजान की एक ख़ास सिफ़त थी। बहुत मामूली इस्तअदाद वाले तलबा अरबी में तर्जुमा करके लाते, बाज़ मर्तबा पूरी–पूरी इबारत बदलनी पढ़ती, मगर उसके बावजूद वह क़द्र फ़रमाते और अक्सर अर्राएद में उसको जगह देते। उससे लिखने वाले में हौसला पैदा हो जाता। इसी तरह फ़िक्री रहनुमाई फ़रमाते, किताबों के मुताले का मशविरा देते और अपनी मजलिसों में किताबों का निचोड़ पेश करते। सच्ची बात यह है कि सैंकड़ों किताबों के मुताले का वह फ़ायदा नहीं हो सकता था जो उनकी मजलिसों से होता था। फ़िक्र के नए–नए ज़वाले खिलते, तारीख़े अदब के वह जवाहर पारे सामने आते जो शायद हज़ारों सफ़हात पढ़ने के बाद समझ में न आए। उनकी मजलिसों से न जाने कितने मुफ़क्किर व मुसन्निफ़ पैदा हुए। रिजाल साज़ी में उस वक़्त उनकी नज़ीर मिलनी मुश्किल है। अपनी शख़्सियत उनके सामने कुछ न थी। पनाइयत की जो इस्लाह तसव्वुफ़ में पढ़ी मौलाना उसकी ज़िन्दा मिसाल थे। हर जगह अपनी नफ़ी फ़रमाते, नाम व नमूद से नफ़रत थी। अपनी इब्तिदाई ज़िन्दगी में उन्होंने मसाजिद में तब्लीग़ इज्तिमाआत में बहुत तक़रीरें की, लेकिन फिर वह तक़रीर के नाम से घबराने लगे। वह स्टेज के आदमी नहीं थे, मगर न जाने कितनों को उन्होंने स्टेज के काबिल बना दिया। इधर चंद सालों से शदीद इसरार पर वह तक़रीर करते तो मग़्ज़ ही मग़्ज़ सामने आतो। मालूम होता कि किताबों के सफ़हात के सफ़हात उनके सामने हैं। कूव्वते हिफ़्ज़ में उनको इम्तियाज था। जब बात करते तो हवाले के साथ करते। उनको रूह की अनाबत हासिल थी। अल्लाह तआला ने बहुत शफ़्फ़ाफ़ दिल दिया था। मालूम होता था कि उन पर दिलों का अक्स पड़ता है। बहुत से मौक़ों पर ऐसे वाक़्यात सामने आए कि उनको तसव्वुफ़ की इस्लाम में कश्फ़ से ही ताबीर किया जा सकता है। उनका दिल हर तरह के कीना व कपट से पाक था। जो करते अल्लाह के लिए करते।

तबियत बड़ी हस्सास थी। अपना काम ख़ुद करते। खिदमत लेना नफ़्स पर बहुत शाक था। मिज़ाज में नफ़ासत थी, बेतरतीबी पसंद न थी, घर में दाख़िल होते तो कोई चीज़ बेतरतीब होती तो ख़ुद ठीक करने लगते और उनमें भी इब्तिदाए रसूल का जज़्बा होता। मशीख़त से कोसों दूर इज़हारे इल्म और ख़ुद नुमाई से दूर–दूर का वास्ता न था। मगर बातों से इल्म उबलता था।

वालिद मरहूम मौलाना सैयद मुहम्मदुल हसनी और मौलाना सैयद मुहम्मद सानी हसनी की वफ़ात मौलाना की

ज़िन्दगी में हुई। हज़रत मौलाना की वफ़ात के बाद यही दोनों भाई हज़रत मौलाना के जांनशीन और उनकी फ़िक्र व अमल के सच्चे अमीन रहे। हज़रत मौलाना को इन दोनों पर जो एतमाद बल्कि नाज़ था वह दुनिया जानती है। मुहब्बत का हाल यह था कि हज़रत को उनकी जुदाई बर्दाश्त नहीं थी। एक बार कुछ अहले ताल्लुक़ दोनों को किसी प्रोगाम के लिए कानपुर ले गए। आने में कुछ देर हुई। वह फ़ोन का ज़माना नहीं था, हज़रत नदवे में मेहमान ख़ाने से बाहर आकर बैठ गए और इन्तिहाई बेचैन हुए, देर रात में जब वह दोनों तश्रीफ़ ले आए तो वह अन्दर तश्रीफ़ ले गए और फ़रमाया कि तुम दोनों रात में कहीं मत जाया करो। हज़रत मौलाना ने अपने बहुत से कामों की तकमील मौलाना वाज़ेह साहब से करवाई। मुस्लिम मोमालिक में इस्लामियत व मग़रबियत की कशमकश के बारे में भी हज़रत मौलाना की बड़ी ख़्वाहिश थी कि वह इस काम को आगे बढ़ाएं। मौलाना का यह ख़ास मौज़ू था। रायबरेली में फ़ज़ीलत के तलबा के सामने इस किताब पर मौलाना का ही मुहाज़िरा होता था। मुहाज़िरा क्या होता था आलमे इस्लाम की ताज़ा सूरते हाल सामने आ जाती। जुग्राफ़ियाई ख़ुसूसियात, इक़्तिसादी हालात, सियासी उतार–चढ़ाव, मालूम होता था कि सब औराक़ मौलाना के सामने खुले हुए हैं, इस पर फ़िक्र की बुलन्दी, वाक़्ईयत और दर्दे दिल मुस्तज़ाद, मौलाना उस पर ख़ून के आंसू रोते और रुलाते, तलबा उनको सुनने के लिए मुश्ताक़ रहते, मगर दो–एक मुहाज़िरात के अलावा आगे वह तैयार न होते और इसरार करते कि छोटे भैया के मुहाज़िरात होने चाहिएं।

इन दोनों भाइयों की रफ़ाक़त व मुहब्बत, हर वक़्त की यकजाई, आपस के मशवरे, एक–दूसरे के लिए बेचैन हो जाना, यह वह सिफ़ात हैं कि इस माद्दी दौर में अन्का नज़र आती हैं। उम्र में सिर्फ़ चार साल का फ़र्क़ था, बेतकल्लुफ़ी थी मगर मौलाना हमेशा मलहूज़ रखते, लोग मुसाफ़ा करने लगते तो फ़रमाते छोटे भय्या इधर हैं। कोई सवाल करता तो अक्सर उन्हीं की तरफ़ महूल कर देते, उनको ख़िताब करके कभी कह देते कि आप तो 0

हमारे मुरशिदी हैं, सफ़रों में भी रफ़ीक़ और मुशीर की तरह साथ रहते। इल्मी व फ़िक्री व दीनी बुलन्द मक़ाम के बावजूद हर जगह पीछे रहते, यह फ़िनाइयत भी इस दौर में नायाब!

उनकी यहीं सिफ़ात थीं कि हज़रत मौलाना रह0 ने राक़िम के सामने फ़रमाया था कि वाज़ेह ख़िलाफ़त के अहल हैं, हम उनको भी ख़िलाफ़त देंगे, उनकी वफ़ात के बाद उनके जानशीन हज़रत मौलाना राबे साहब ने बाक़ाएदा उनकी तरफ़ से मौलाना को इजाज़त बैत व इरशाद दी, लेकिन कभी कहीं इसका इज़हार तक न हुआ, एक इन्तिहाई चाहने वाले शार्गिद ने बैत के लिए बहुत इसरार किया तो ज़बरदस्ती हज़रत मौलाना राबे साहब मदज़िल्लाह के पास ले जाकर बैत करवाया, और फ़रमाया कि "अमीर एक ही होता है।"

उन्होंने दीन भी देखा, दुनिया भी देखी, वह शेखों से भी मिले और दुनिया के बाकमाल और साहबे इक़्तिदार अफ़राद से भी, दीन में उनका तसल्लुब बढ़ता गया, आल इण्डिया रेडियो में मुलाज़िमत के दौरान उनको मौक़ा मिला, उन्होंने पण्डित नेहरू से भी इन्टरव्यू लिया और सदर नासिर से भी, वह मलिक सऊद से भी मिले और मौलाना आज़ाद से मिलने का भी मौक़ा मिला। हज़रत मौलाना के साथ वह शाहाने अरब के यहां भी गए लेकिन वह अपने मामू का परतो थे, न वह उनके जाह व जलाल से मुतास्सिर हुए और न उनकी आंखें खीरा हुईं, उन्होंने जमाअत इस्लामी का पूरा लिट्रेचर पढ़ा था, लेकिन पूरी बसीरत के साथ उसके हुस्न व क़बह को वह चुनना समझते थे, शायद कम लोगों को इसका अंदाज़ा हो, गहरे मुताले के बाद इस नतीजे पर पहुंचे थे कि आलमे इस्लाम के लिए वही रास्ता कामयाबी का है जो इमाम सरहिन्दी रह0 ने अख़्तियार किया था, मगर उनकी पॉलिसी को सख़्त मुज़िर समझते थे और आलमे इस्लाम की मौजूदा वह नौख़ेज़ी को वह इसी ग़लत पॉलिसी का नतीजा गरदानते थे।

हरमैन शरीफ़ैन से उनको गहरा लगाव था, आख़िर दौर में अपनी सेहत और ऐसाब की कमज़ोरी के बाइस शदीद ख़्वाहिश के बावजूद हाज़िरी नहीं हो पा रही थी, मगर हर जाने वाले को बड़े शौक़ से रुख़्सत करते, एक मामूली शार्गिद ने मदीना तैय्यबा से फ़ोन किया तो बे ख़ुदहो गए।

नदवतुल उलमा के मोतमद तालीम रहे, राब्ता अदबे इस्लामी के जनरल सेक्रेटरी रहे, लेकिन सामने आना उनको कभी, ओहदों के इज़हार से उनको कभी सरोकार न था।

बुज़ुर्गों की मुहब्बत उनके ख़मीर में थी, मजलिसों में उनका तज़किरा करते, अपने छोटों को उनके वाक़्यात सुनाते, मुनकिर देखते तो नकीर फ़रमाते और कभी ज़रूरत होती तो बड़ी साफ़ गोई के साथ बात कह देते।

असहाब-ए-कहफ़ एक अध्ययन

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"और इसी तरह हमने उनकी ख़बर खोल दी ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़यामत के कोई शुब्हा नहीं, जब वह अपनी बात में आपस में झगड़ने लगे तो बोले कि इन पर कोई इमारत बना दो, उनका रब उनको बेहतर जानता है जो उनके मामले में ग़ालिब आए। उन्होंने कहा कि हम तो उनके पास एक मस्जिद बनाएंगे।" (सूरह कहफ़: 21)

अल्लाह तआला ने लोगों के लिए यह बात वाज़ेह कर दी कि असहाबे कहफ़ तीन सौ साल तक सोते रहे और इस मुद्दत में न उनका जिस्म सड़ा, न उनको कोई तकलीफ़ और परेशानी लाहिक़ हुई इसलिए कि वह ज़िन्दा थे और सो रहे थे और वह इस तरह से थे कि अगर कोई आने वाला देखता तो घबराकर भागता। यह समझकर कि यह लोग न जाने हमारे साथ क्या करेंगे। इस वाक़्ये कि तफ़सील में जाने का मक़सद यह बताया गया है कि तमाम लोग अच्छी तरह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा और पक्का है। अल्लाह ने जो कुछ कह दिया है कि आख़िरत में तुम्हारे अमल से ऐसा होगा तो इसमें कोई शक बाक़ी नहीं रहना चाहिए। इसलिए कि उसकी बात बिल्कुल हक़ है। अरबी ज़बान में हक़ कहते हैं जो वाक़्या के मुताबिक़ हो, गोया इस वाक़्ये के बयान करने के बाद लोगों को यह यक़ीन हो जाना चाहिए कि क़यामत में कोई शुब्हा नहीं। यानि तमाम इन्सानों को पुख़्ता यक़ीन हो जाना चाहिए कि हमें मरने के बाद अल्लाह तबारक व तआला के सामने पेश होना है, लिहाज़ा लोगों को अपने आमाल के साथ आख़िरत के तसव्वुर पर भी यक़ीन जम जाए। आयते बाला में यक़ीन जमने के लिए ताकि वह जान लें का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है। यानि वह इस बात पर यक़ीन कर लें ज़ाहिर है जिस शख़्स ने भी असहाबे कहफ़ का वाक़्या अपनी आंखों से देखा होगा, उसको यक़ीन आ गया होगा कि जो अल्लाह यह कर सकता है, यानि तीन सौ साल तक उनको महफ़ूज़ रख सकता है, तो वह सबकुछ कर सकता है। लिहाज़ा अल्लाह आख़िरत के बारे में जो कुछ कह रहा है उस पर कैसे हम शुब्हा कर सकते हैं। असहाबे कहफ़ को तीन सौ साल बाद बेदार होने पर तबई मौत आयी, चुनान्चे जब उनका इन्तिक़ाल हो गया तो वहां के लोग आपस में झगड़ने लगे कि हमें इन (असहाबे कहफ़) के मामले में क्या करना चाहिए। यह लोग बड़े बुज़ुर्ग हैं, किसी ने कहा कि हम यहां मस्जिद बना देंगे या कोई बड़ा मज़ार बना देंगे, क्योंकि लोगों को जब यह मालूम हुआ कि अल्लाह तआला ने इनको तीन सौ साल तक सुलाया और ज़िन्दा रखा तो उनसे अक़ीदत हो गयी थी, इसीलिए सब लोग अक़ीदत के मारे टूटे पड़ रहे थे। क्योंकि इस वक़्त तक मुसलमानों की ख़ासी तादाद हो चुकी थी, इसलिए सब जोशे अक़ीदत से कह रहे थे कि हम यहां एक इमारत या मज़ार बना देंगे। इरशाद होता है कि अल्लाह तआला ज़्यादा इल्म वाला है कि इन लोगों के साथ क्या करना चाहिए। चुनान्चे जो लोग उनके मामले में ग़ालिब आ गए वह हुकूमत के लोग हों या वहां के कुछ समझदार लोग हों, उन्होंने कहा: इन पर हम इमारत नहीं बल्कि एक मस्जिद (इबादतगाह) बना देंगे। यह बात बहुत मुमकिन है कि वहां इबादत गाह बनायी भी गयी हो। इसलिए कि वहां कुछ ऐसे आसार मौजूद हैं जिनको देखकर ख़्याल होता है कि इस जगह कभी कोई मस्जिद थी।

"अब वह कहेंगे कि वह तीन थे, चौथा उनका कुत्ता था। और बाज़ कहेंगे कि वह पांच थे और छठा उनका कुत्ता था, जैसे बिन देखे तीर चलाना और बाज़ कहेंगे कि वह सात थे और आठवां उनका कुत्ता था। कह दीजिए कि मेरा रब उनकी तादाद को ख़ूब जानता है, तो उनकी ख़बर कम ही लोगों को है, तो आप उनके बारे में सिर्फ़ सरसरी बात कीजिए और उनमें किसी से उनके बारे में मत पूछिए।" (सूरह कहफ़: 22)

असहाबे कहफ़ की तादाद का मामला बहुत दिक़्क़त तलब है। उनकी तादाद के मामले में लोग बड़ी उलझन में पड़ गए। इसलिए कि सबने नहीं देखा था, ज़ाहिर है कि मजमे में हर एक कहां देख सकता था कि कितने आदमी थे। इसलिए जिसने जितने देखे, उतने बयान किए, किसी ने कहा कि तीन आदमी थे चौथा उनका कुत्ता था, और किसी ने कहा कि पांच आदमी थे छठा

उनका कुत्ता था, और कुछ लोग ऐसे भी थे जो कहते थे कि उनकी तादाद सात की है और आठवां उनका कुत्ता था। इरशाद होता है कि ऐ नबी कह दीजिए कि मेरा रब उनकी तादाद को ज़्यादा जानता है, अस्ल तादाद बहुत थोड़े ही लोग जानते हैं, ज़ाहिर है कि जिन्होंने अपनी आंखों से पहली फ़ुरसत में देखा होगा वही अस्ल तादाद जानते होंगे, बाक़ी लोग अंदाज़ा लगा रहे हैं, गोया सबने अपना–अपना अंदाज़ा लगाया। इसलिए कि जो चीज़ नहीं देखी थी, उसमें अंदाज़े ही से काम चला रहे थे। ''रज्म'' पत्थर मारने को कहते हैं। अब पत्थर जिस तरफ़ लग जाए वही दुरुस्त है, इसी तरह एक बात कह दी, शायद वही सही हो।

अल्लाह तआला नबी स0अ0 को मुख़ातिब करके फ़रमाता है कि कह दीजिए कि मेरा रब उनकी सही तादाद जानता है। और यह एक ऐसा मसला है कि उनमें पड़ने की ज़रूरत ही नहीं है। अस्ल तो इस वाक़्ये से इबरत मक़सूद है। यहां असहाबे कहफ़ का जो क़िस्सा जो बयान किया जा रहा है यह महज़ तारीख़ का कोई वाक़्या नहीं बयान हो रहा है जिससे एक तारीख़ी बात मालूम हो जाए, बल्कि यह वाक़्या इबरत के लिए बताया गया है लिहाज़ा इन लोगों की सही तादाद को अल्लाह तआला ने अपने इल्म में रखा है। इसका ताल्लुक़ अल्लाह से है। हमें यह देखना चाहिए कि इस वाक़्ये से हमको क्या इबरत हासिल हुई है। इसीलिए नबी करीम स0अ0 से फ़रमाया गया कि आप इस मसले में इन लोगों के साथ ज़्यादा झगड़ा न कीजिए। हां ज़ाहिरी तौर पर बारे साफ़ रखिए और इनमें से किसी से मत पूछिए, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, यह मसला ज़्यादा ग़ौर व फ़िक्र का नहीं है। अस्ल मसला यह है कि इस वाक़्ये से हमें क्या इबरत हासिल होती है। इस वाक़्ये हम यह समझें कि अल्लाह तआला ही सबकुछ कर सकता है और वह करता रहता है। ऐसा नहीं है कि इत्तिफ़ाक़न ऐसा वाक़्या पेश आ गया हो, बल्कि वह अपनी कुदरत के मनाज़िर दिखाता रहता है। और किसी चीज़ के बारे में यह हरगिज़ न कहिए कि इसको मैं कल करने वाला हूं, हां यह कहिए कि अल्लाह चाहेगा तो कर लूंगा और जब कभी ज़हन से उतर जाए तो अपने रब को याद कीजिए और कहिए कि उम्मीद है कि मेरा रब उससे ज़्यादा नेकी की राह मुझे समझा देगा।

आप स0अ0 से जब असहाबे कहफ़ के बारे में पूछा गया था तो आप स0अ0 ने फ़रमाया था कि यह वाक़्या हम कल बताएंगे यानि अल्लाह से पूछ कर बतांएगे। और उस वक़्त आप स0अ0 ने इंशाअल्लाह नहीं कहा था और अल्लाह तआला जिसकी ज़ात बेइन्तिहा ग़नी है, इसीलिए अल्लाह हुज़ूर स0अ0 को एक नसीहत के बतौर मुख़ातिब करते हुए तमाम मुसलमानों को हिदायत देता है और इसीलिए इस बात को कुरआन मजीद में बयान किया गया है वरना जो बात सारे मुसलमानों को बताने की नहीं होती वह कुरआन मजीद में नहीं कही जाती। फ़रमाया कि आप किसी चीज़ के बारे में ऐसा न कहें कि मैं कल ऐसा करूंगा, मगर यह कहकर कि अगर अल्लाह चाहेगा यानि आप जो भी काम करें इंशाअल्लाह कहकर करना चाहिए। किसी भी काम को अपने ऊपर नहीं लेना चाहिए। इसलिए कि मुस्तक़बिल में क्या होने वाला है वह न आपके इल्म में है और न अख़्तियार में है। मसलन आप कहते हैं कि हम फ़लां काम करेंगे और अगर उस काम को न कर सके तो आपका वादा झूठा होगा, हां अगर अल्लाह चाहेगा तो यक़ीनन हो जाएगा और तरीक़ा सही है।

फ़रमाया जब आप भूल जाएं तो अपने रब को याद कीजिए। यानि अगर इस बात को भूल जाएं तो अल्लाह तआला से अपनी भूल का ज़िक्र कीजिए और माफ़ी मांग लीजिए और यह कहिए कि अल्लाह से उम्मीद है कि अल्लाह मुझको सही रास्ते पर जो कि रूश्द व हिदायत का रास्ता है, मुझे उकसी हिदायत देगा और मुझे बिल्कुल सही रास्ते पर चलाएगा।

''और वह अपने ग़ार में तीन सौ साल ठहरे और मज़ीद नौ साल।'' (सूरह कहफ़: 25)

फ़रमाया वह लोग इस ग़ार में तीन सौ साल और उस पर नौ साल ज़्यादा रहे। यह तीन सौ साल सूरज के एतबार से होते हैं यानि शम्सी जन्तरी के एतबार से तीन सौ साल होते है और फिर इसमें नौ साल और बढ़ जाते हैं। इसलिए कि हर सौ शम्सी साल पर तीन साल बढ़ते हैं। क्योंकि हर शम्सी साल में ग्यारह रोज़ बढ़ जाते हैं। तो क़मरी लिहाज़ से तीन सौ साल हुए और शम्सी लिहाज़ से तीन सौ नौ साल हुए।

आइना–ए–नबवी

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी (रह०)

अल्लाह तआला ने हम सबको एक ऐसा क़ाएद और ऐसा रहनुमा अता फ़रमाया, जिसकी मिस्ल न कोई पहले हुआ और न बाद में होगा, रसूले पाक स0अ0 जो सारी इन्सानियत के इमाम और क़ाएद हैं, उनके बारे में कुरआन मजीद में फ़रमाया गया है:

"यक़ीनन तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल स0अ0 में बेहतरीन नमूना मौजूद है उसके लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और उसने अल्लाह को बहुत याद किया हो।"

हुज़ूर स0अ0 की ज़ात वाला सिफ़ात में उस्वा–ए–हुस्ना रखा गया है, लेकिन किसके लिए जो अल्लाह और यौमे आख़िरत पर यक़ीन रखता हो, ऐसे शख़्स के लिए रसूले पाक स0अ0 की ज़ात उस्वाए हुस्ना है। आप स0अ0 ने सारी इन्सानियत को अपनी ज़िन्दगी नमूने के तौर पर पेश फ़रमायी, लिहाज़ा हर इन्सान को चाहिए कि वह अपने आप को इस आइने में देख ले, अगर आप स0अ0 के आइने में वह शख़्स सही है तो फिर सही है और अगर ग़लत है तो फिर ग़लत है, जिसको फ़ौरी तौर पर सही करने की कोशिश करनी चाहिए। आप स0अ0 ने अपनी ज़िन्दगी में कोई चीज़ तिश्ना नहीं छोड़ी है कि आदमी किसी दूसरी जगह नमूना तलाश करे, आप स0अ0 ने हर चीज़ मुकम्मल तौर पर पेश फ़रमा दी है। अब यह हमारे और आपकी बात है कि हम उसको कितना तलाश करते हैं, ज़ाहिर है कि हर चीज़ तलाश से मिलती है, जो मेहनत करता है, जद्दोजहद करता है उसी को फल मिलता है, जो मेहनत करेगा और कोशिश करेगा वही उसका सिला पाएगा उसको घर बैठे कुछ नहीं मिलेगा। अल्लाह तआला ने आप स0अ0 को क़यामत तक के लिए तमाम इन्सानों के लिए नमूना बना दिया है। अब हमको और आपको देखना चाहिए कि हमारे अन्दर क्या कमी है। हमें अपनी ज़ात को हयाते नबवी स0अ0 का आइना सामने रखकर दुरूस्त करने की कोशिश करनी चाहिए। ज़ाहिर है कि कमियां हर इन्सान के अन्दर बहुत हैं और उन्हीं के इज़ाला के लिए अम्बिया अलै0 दुनिया के अन्दर आते थे।

इन्सानी समाज की इस्लाह में अम्बिया का पहला काम दावते इलाही अलतौहीद था। वह लोगों को अक़ीदाए तौहीद की तरफ़ बुलाते थे कि उसके बिना नजात ही मुमकिन नहीं और नम्बर दो पर जिस क़ौम में जो कमी होती थी वह बताते थे। यह एक लाज़मी बात थी कि अगर हम कुरआन मजीद में हज़रत हूद, हज़रत इब्राहीम, हज़रत शोएब, हज़रत लूत, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलै0 के तज़किरे देखें तो महसूस होगा कि कुरआन उनके तज़किरे के साथ उनकी क़ौम की बीमारी भी बताता है जिसका अम्बिया ने इलाज किया। गोया नबी का एक काम यह होता था कि वह तौहीद बताते थे, दूसरा काम यह होता था कि क़ौम में जो बीमारी होती थी उसकी इस्लाह करते थे और उनकी तीसरी ख़ासियत यह होती थी कि वह उस काम पर कोई उजरत नहीं लेते थे। उनका कहना था कि हमारी उजरत अल्लाह के यहां है। इसके अलावा वह दो बातें अपनी क़ौम से मज़ीद कहते थे। पहली यह कि मैं तुम्हारा ख़ैरख़्वाह हूं, तुम्हारा भला चाहने वाला हूं, और दूसरी यह कि मैं अमानतदार हूं, ज़ाहिर है कि जब किसी का भला चाहेंगे तो उसको सही बात बताएंगे और जब अमानतदार होंगे तो बात भी सही पहुंचाएगे। अब अगर इन सिफ़ात में कमी है तो वह उतना ही नाक़िस जांनशीन समझा जाएगा।

अम्बिया की ज़िन्दिगयां ख़ासकर नबीअकरम स0अ0 की ज़िन्दगी हर फ़र्द बशर के लिए आइना की हैसियत रखती है। आप स0अ0 उलमा के लिए आइना हैं, अवाम के लिए आइना हैं, मज़दूर तबक़ा के लिए आइना हैं, कारख़ानों के मालिकों के लिए आइना हैं, शौहरों के लिए आइना हैं, ग़ुलामों के लिए आइना हैं, पढ़े–लिखों के लिए आइना हैं, अनपढ़ों के लिए आइना हैं, मज़दूर पेशा लोगों के लिए आइना हैं, ग़रज़ कि हर एक के लिए आपने एक नमूना रखा है। और आप स0अ0 ने बज़ाते खुद सारे काम किए भी हैं। आप स0अ0 ने तिजारत भी की है, लिहाज़ा आप ताजिर पेशा लोगों के लिए भी नमूना है, इस सिलसिले में आप स0अ0 ने ज़र्री उसूल भी दिए हैं जो तमाम इन्सानियत के लिए नमूना हैं, आप स0अ0 ने यह भी सिखाया कि वक़्त कैसे गुज़ारा जाए। आप स0अ0 ने यह भी बयान किया कि किस तरह वक़्त की क़द्र करनी चाहिए और वक़्त को पहचानना चाहिए। ग़रज़ कि रसूले पाक स0अ0 की ज़ात हर एतबार से सबके लिए आइना है।

इन्सानी ज़िन्दगी को संवारने का दूसरा बेहतरीन आइना कुरआन मजीद है। इरशादे इलाही है:

"इसमें (कुरआन मजीद) में तुम्हारा तज़किरा है। भला तुम ग़ौर नहीं करते कि तुम्हारा तज़किरा क्या है।"

मौजूदा दौर में देखा जाए तो हम लोग मनमानी से काम लेते हैं। हमारे जो जी में आता है हम वही करते हैं, और हम यह नहीं देखते कि कुरआने करीम का मक़सूद क्या है और रसूले पाक स0अ0 का उस्वा क्या बयान कर रहा है। यही वजह है कि आज हमारे अन्दर कमी पर कमी पैदा होती चली जा रही है। जैसे किसी के मुंह पर काला धब्बा पड़ जाए और वह शख़्स कभी आइना न देखे और उसके चेहरे पर कालापन बढ़ता जाए तो उसका अंजाम यह होगा कि धीरे–धीरे दाग़ बढ़ता जाएगा और वह सरापा दाग़दार हो जाएगा। ठीक उसी तरह आज हमारी सीरत पर भी काला धब्बा लग गया है और चूंकि हमने कुरआन मजीद और उस्वाए नबवी का आइना देखना बन्द कर दिया इसलिए हमारी सीरत सरापा दाग़दार होती जा रही है।

हक़ीक़ी माने में अगर कोई शख़्स कुरआन और हदीस पर अमल करने वाला हो तो उसकी ज़ात खुद आइना बन सकती है जैसा कि हदीस में भी आता है कि मोमिन मोमिन के लिए आइना है। आइने के ख़ासियत यह है कि वह ख़ामोशी के साथ इस्लाह का क़ायल है। आज तक आपने यह नहीं देखा होगा कि किसी आइने ने चिल्लाकर कहा हो कि तुम ग़लत हो। आप जब आइना देखेंगे तो आपको खुद ही अपना दाग़ नज़र आ जाएगा। आइने में दाग़ देखेने वाला खुद समझ जाता है कि मुझसे आइना कह रहा है कि तुम अपने इस दाग़ को धो लो। और हक़ीक़त भी यही है कि जो हक़ीक़ी ख़ैरख़्वाह होता है वह इसी तरह अपने क़रीबी को बचाता भी है। आपने देखा होगा जो लोग एक दस्तरख़्वान पर साथ बैठकर खाना खाते हैं और अगर किसी की दाढ़ी पर दाल या चावल लग जाता है तो समझदार इन्सान कभी चिल्लाकर नहीं कहता कि उसे साफ़ कर लो, बल्कि इशारा करता है कि उसे ठीक कर लो वरना लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे। ग़रज़ कि आइना बड़ी अजीब व ग़रीब चीज़ है। हदीस पाक में इसीलिए कहा गया है कि मोमिन मोमिन के लिए आइना है। यानि एक मोमिन को दूसरे मोमिन के लिए आइने की तरह होना चाहिए। दूसरे अपना चेहरा हममें देखकर अपनी इस्लाह कर सकें। लेकिन उसके लिए बुनियादी शर्त यह है कि हम अपनेआप को कुरआन मजीद और हुज़ूर अकरम स0अ0 के आइने में संवारे।

आइना हर आदमी नहीं बन पाता। आइना वह बन पाता है जो कुरआन मजीद के उस्वा में अपने को संवारे और हुज़ूरे पाक स0अ0 के नमूने को हमेशा पेशे नज़र रखे कि आपने क्या बताया है, आपने क्या अमल किया है, आपने क्या समझाया है। जब हम यह देखेंगे तो हम आइना बन जाएंगे और जब हम आइना बन जाएंगे तो क्या कहने। हम खुद तो साफ़–शफ़्फ़ाफ़ होंगे ही और फिर दूसरे भी हमें देखकर अपनेआप को ठीक कर लेंगे। आइने को दाग़दार नहीं होना चाहिए। वरना दूसरा इसमें ख़ुदको सही से देख ही नहीं सकता और इस्लाह भी नहीं ले सकता। इसलिए मोमिन को कहा गया कि आइना बनो यानि अपनी सीरत के सारे दाग़ साफ़ कर लो औरा इस तरह चमकने लगो कि दूसरा अपना चेहरा आपके अन्दर देख ले।

ज़रूरत इस बात की है कि हम ख़ुदको कुरआन मजीद में देखकर दुरूस्त करें और हमारे सामने रसूल स0अ0 की हयाते पाक मौजूद हो यह एक हक़ीक़त है कि हमारी ज़िन्दगी के हर लम्हे में आप स0अ0 का नमूना मौजूद है। और इस सिलसिले में हम यह नहीं कह सकते हैं कि हम नहीं जानते हैं। आपका चलना–फिरना, सोना–जागना, आपका अज़वाजे मुताहरात के साथ मामलात करना, आपका लोगों के साथ अच्छा सुलूक करना, आपका बड़ों से अच्छा मामला करना, आपका ग़ैरों के साथ भलाई का मामला करना, हर चीज़ बिल्कुल अयां हैं, और अयां भी ऐसी बयां है कि बिल्कुल चमकती–दमकती है। अगर उसकी रोशनी में हम अ पना जाएज़ा लें तो हमें साफ़ नज़र आ जाएगा कि हम लोग ऐब वाले हैं। एक बात याद रखने की यह भी है कि जब हम एक द ूसरे के ऐब को दूर करें तो हम वहीं अख़्तियार करें जो रसूलुल्लाह स0अ0 ने तलक़ीन फ़रमाया है। आप स0अ0 जब लोगों की इस्लाह का इरादा फ़रमाते थे तो ऐसी कोई बात नहीं कहते थे जिससे किसी की दिलआज़ादी हो, बल्कि यूं मुख़ातिब होते थे कि इन लोगों को क्या होगया कि ऐसा नहीं करना चाहिए। यानि आप स0अ0 अच्छे और उम्दा अंदाज़ से तलक़ीन फ़रमाते थे। अफ़सोस कि हम लोगों ने इस आइने को देखना छोड़ दिया है।

क्रमवार:

त्याग व समानता क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मेहमाने रसूल स0अ0 की ज़ियाफ़त

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि एक शख़्स हुज़ूर स0अ0 के पास आया और (ख़िदमते अक़दस में) अर्ज़ किया: मैं फ़क्र व फ़ाक़ा का मारा हूं, आप स0अ0 ने अज़वाज–ए–मुतहरात में से किसी के पास भेजा कि कुछ हो तो ले आओ, उन्होंने कहला भेजा कि उस ज़ात की क़सम जिसने आपको पैग़ामे हक़ लेकर भेजा है, पानी के सिवा हमारे पास कुछ भी नहीं। इसके बाद आप स0अ0 ने दूसरी बीवी के यहां भेजा, वहां से भी यही जवाब आया, आप स0अ0 ने फ़रमाया: आज की रात कौन इसकी मेहमानी करेगा?हज़रात–ए–अन्सार में से एक साहब ने फ़रमाया: अल्लाह के नबी स0अ0! मैं, चुनान्चा (यह कह कर वह) उस शख़्स को लेकर अपने ख़ेमे की तरफ़ गए, और अपनी अहिल्या से कहा: हुज़ूर स0अ0 के मेहमान की ज़ियाफ़त करो, एक और रिवायत में है कि उन्होंने अहिल्या से पूछा कि तुम्हारे पास कुछ है? उन्होंने जवाब दिया, नहीं, सिर्फ़ बच्चों का खाना है, अन्सारी ने अहिल्या से कहा: बच्चों को किसी तरह बहला दो, और जब वह रात का खाना मांगे, तो किसी तरह बहला–फुसला कर सुला दो, और जब हमारा मेहमान खाने के लिए बैठे तो चिराग़ बुझा देना, और हम मेहमान पर ऐसा ज़ाहिर करेंगे कि गोया हम भी खाने में शरीक हैं, चुनान्चा यह लोग (खाना खाने के लिए बैठे) और मेहमान ने खाना खाया, और उन दोनों ने भूखे रहकर रात गुज़ारी, जब वह अन्सारी सुबह को हुज़ूर स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आप स0अ0 ने फ़रमाया: आज की रात अपने मेहमान के साथ तुम दोनों के सुलूक से अल्लाह तआला बहुत ख़ुश हुए। (मुस्लिम: 2054)

एक बार रसूलुल्लाह स0अ0 के पास एक बहुत परेशानहाल शख़्स आया, उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह बहुत दुखी है और उसके पास कुछ असबाब नहीं हैं जिनसे वह अपना काम चलाए। उसने अल्लाह के रसूल स0अ0 से यह कहा भी कि मैं बहुत परेशानहाल हूं, ज़ाहिर है कि आप स0अ0 से बस इतना ही कहना काफ़ी था, आप स0अ0 ने फ़ौरन अपने किसी घर में कहलवाया कि अगर खाने में कुछ हो तो भिजवाओ, लेकिन आप स0अ0 ने अपने जिस घर में भी आदमी भेजा वहां से एक ही जवाब आया कि उस ज़ात की क़सम जिसने आप स0अ0 को हक़ के साथ भेजा है, घर में सिवाए पानी के और कुछ है ही नहीं। यह क़िस्सा मक्का मुकर्रमा का नहीं, मदीना मुनव्वरा का है और यह उस ज़माने का क़िस्सा है जब ख़ज़ाने आप स0अ0 के क़दमों में आ रहे थे और फुतूहात का दौर शुरू हो चला था। लेकिन वाक़्या यह है कि वह एक सैले रवां था जो इधर से आ रहा था और उधर जा रहा था। घर में कुछ बाक़ी नहीं रहता था। चुनान्चे तमाम अज़वाजे मुताहरात ने माज़रत की कि सिवाए पानी के कुछ नहीं है।

सहाबी का अमल और क़ुरआनी बशारत

इस माज़रत के बाद आप स0अ0 ने ऐलान फ़रमाया: यह एक मेहमहान है, आज रात कौन इसकी ज़ियाफ़त करेगा, यह बेचारा ज़रूरत मंद है, इसको कोई शख़्स अपने घर ले जाए और इसकी ज़ियाफ़त कर दे। इसको खिला–पिला दे, चुनान्चे एक अंसारी सहाबी खड़े हुए और उन्होंने कहा, अल्लाह के रसूल स0अ0 मैं हाज़िर हूं, मौक़ा इनायत फ़रमाएं। अल्लाह के रसूल स0अ0 ने इजाज़त दे दी और वह सहाबी उनको अपनी क़यामगाह पर ले आए और बीवी से कहा कि यह अल्लाह के रसूल स0अ0 के मेहमान हैं, आज रात हमें इनकी ज़ियाफ़त करनी है, क्या घर में कुछ है? बीवी कहने लगीं कि बच्चों

के लिए थोड़ा सा खाना रखा है और उसके सिवा कुछ नहीं है, सहाबी ने कहा कि बच्चों को बहला–फुसला कर सुला दो और जब हम लोग रात को खाना खाने के लिए बैठें तो अंधेरा होगा लिहाज़ा हम चिराग़ बुझा देंगे और यह ज़ाहिर करेंगे कि हम खाना खा रहे हैं, चुनान्चे ऐसा ही हुआ, चिराग़ गुल कर दिया गया और मेहमान खाता रहा और उन दोनों का हाथ प्लेट की तरफ़ जा रहा था और मुंह की तरफ़ जा रहा था। न हाथ में कुछ था न मुंह में कुछ था। और उन दोनों ने उसी भूख के हाल में पूरी रात बसर की फिर जब सुबह अल्लाह के रसूल स0अ0 की ख़िदमत में आए तो अल्लाह के रसूल स0अ0 ने फ़रमाया अल्लाह तआला को तुम्हारा यह अमल बहुत पसंद आया है और यह आयत नाज़िल हुई है:

"और वह (दूसरों को) अपनी जानों पर मुक़द्दम रखते हैं चाहे ख़ुद तंगहाली का शिकार हों।" (हश्र: 9)

इन्तिहाई ईसार:

इस हदीस में यह वाक़्या ख़ास तौर पर पेशेनज़र रहे जोकि बहुत आगे की बात है कि उन्होंने अपने बच्चों को भूखा सुला दिया। एक बाप को अपने बच्चों से तबई तौर पर प्यार होता है और फिर मां तो किसी सूरत राज़ी ही न होती। वह कहती यह कैसे हो सकता है, मैं कैसे अपने बच्चों को भूखा सुला दूं, यह बहुत मुश्किल है, लेकिन चूंकि मेहमान अल्लाह के रसूल स0अ0 के थे लिहाज़ा न जाने उन्होंने अपने बच्चों को किस तरह भूखा सुलाया होगा। बच्चे भूख के मारे बेचारे परेशान होंगे, अलबत्ता यह इन्तिहाई दर्जे की कुर्बानी है कि मेहमान को खिला दिया और ख़ुद भूखे रहे और बच्चे भी रात में भूखे सोए।

सहाबा–ए–किराम का हाल हम लोगों की तरह नहीं था कि एक वक़्त में इतना खा लिया कि अगर एक–दो वक़्त खाना न मिले तब भी काम चल जाए। जैसा कि रमज़ान में सहरी में इतना खा लिया जाता है कि पूरे दिन कुछ पता नहीं चलता। उस ज़माने में जो एक वक़्त का खाना मिल जाता था वह इतना होता था कि बस उसी वक़्त की ज़रूरत पूरी हो सके। अब ज़ाहिर है कि दूसरे वक़्त में बड़ी शिद्दत से भूख लगती होगी।

यह इन्तिहाई ईसार का वाक़्या है और इस तरह के वाक़्यात हज़राते सहाबा रज़ि0 के न जाने कितने हैं। एक सहाबी के बारे में आता है कि उन्होंने शिद्दते प्यास में ख़ुद अपनी जान दे दी मगर पानी पीने में दूसरे सहाबी को तरजीह दी। वाक़्या यह है कि यह सब इन्तिहाई दर्जे की बात है। और यह वाक़्यात इसीलिए नक़्ल किए जाते हैं कि इसका कुछ हिस्सा हम लोगों को भी हासिल हो। अगर आज आदमी अपनी जान नहीं दे रहा और नहीं दे सकता तो कम अज कम थोड़ी क़ुर्बानी ज़रूर दे सकता है। इन वाक़्यात से यही मिज़ाज बनाया गया है और इसीलिए ईसार के यह वाक़्यात नक़्ल किए जाते हैं।

नबवी ईसार का एक नमूना

हज़रत सुहैल बिन साद रज़ि0 से रिवायत है कि एक औरत बुनी हुई चादर लेकर हुज़ूर स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि अल्लाह के नबी आपको पहनाने के लिए यह चादर मैंने अपने हाथ से बुनी है। हुज़ूर स0अ0 ने वह चादर क़ुबूल फ़रमा ली। उस वक़्त आपको उसकी ज़रूरत थी, फिर वही चादर जेबे तन फ़रमाकर हम लोगों के पास तश्रीफ़ लाए, एक शख़्स ने कहा यह चादर आप हमें इनायत फ़रमा दें, यह तो बड़ी ख़ूबसूरत है। आप स0अ0 ने फ़रमाया अच्छा: फिर आप मजलिस में बैठ गए, कुछ देर बाद वापस तश्रीफ़ ले गए और चादर तह करके उस शख़्स को भेज दी। लोगों ने उस शख़्स से कहा कि तुमने यह अच्छा नहीं किया। आप स0अ0 ने उसको ज़ेबेतन फ़रमाया और उस वक़्त आप उसके हाजतमंद थे। तुमने हुज़ूर स0अ0 से यह चादर मांग ली, हालांकि तुम्हें यह मालूम है कि हुज़ूर स0अ0 साएल को वापस नहीं फ़रमाते। इस शख़्स ने कहा: मैंने यह चादर पहनने के लिए नहीं मांगी बल्कि इसलिए मांगी कि मरने के बाद यही मेरा कफ़न हो। हज़रत सुहैल फ़रमाते हैं कि वही चादर उसका कफ़न बनी। (सही बुख़ारी: 1277)

हज़रत सुहैल बिन साद रज़ि0 फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल स0अ0 की ख़िदमत में एक ख़ातून आयी और एक चादर पेश की और यह अर्ज़ किया कि अल्लाह के रसूल मैंने अपने हाथों से इस चादर को आपके लिए बुना है, आप स0अ0 ने वह चादर बड़ी ख़ुशी से क़ुबूल फ़रमायी और उस वक़्त आप स0अ0 को ऐसी चादर की ज़रूरत भी थी, इसलिए कि जो कुछ भी माल

आता था वह सब आप स0अ0 लोगों को हदिया दे देते थे और आप स0अ0 के पास पहनने के लिए एक ही चादर थी या जो भी बात थी बहरहाल उस वक़्त आप स0अ0 को एक चादर की ज़रूरत थी, लिहाज़ा आप स0अ0 ने उस हदिया को क़ुबूल फ़रमाया और घर में तश्रीफ़ ले गए और जब बाहर तश्रीफ़ लाए तो आप वही चादर ज़ेबेतन फ़रमाए हुए थे। मजलिस में एक सहाबी बैठे थे, वह कहने लगे कि अल्लाह के रसूल स0अ0 आपकी चादर बड़ी ख़ूबसूरत और अच्छी लग रही है, अगर आप यह चादर मुझे इनायत फ़रमाएं तो बहुत अच्छा हो। आप स0अ0 ने फ़रमाया कि बहुत ख़ूब, मुनासिब है। फिर आप स0अ0 कुछ देर मजलिस में तश्रीफ़ फ़रमा रहे और जब घर तश्रीफ़ ले गए तो अपनी चादर उतार कर और तहाकर उन सहाबी को दे दी, इस मजलिस में जो सहाबा बैठे हुए थे उन्होंने इन सहाबी से कहा कि तुमने अच्छा नहीं किया तुम देख रहे हो कि अल्लाह के रसूल स0अ0 को इस वक़्त चादर की ज़रूरत थी और जो चादर आपको दी गयी, आपने उसको फ़ौरन ले जाकर इस्तेमाल किया, ऐसी सूरत में तुम्हें चादर नहीं मांगना चाहिए था और तुम यह भी बख़ूबी जानते हो कि हुज़ूर स0अ0 से महज़ ख़्वाहिश का भी इज़हार कर दिया जाए तो आप कभी रद्द नहीं फ़रमाते और उस वक़्त आप स0अ0 को इस चादर की सख़्त ज़रूरत थी, इसीलिए फ़ौरन आपने वह चादर इस्तेमाल फ़रमायी। फिर तुमने क्यों उसको मांगा? लेकिन वह भी अल्लाह का बंदा अजब था। कहने लगा कि मैंने चादर पहनने के लिए नहीं मांगी है। महज़ इस शौक़ से मांगी है कि यह चादर आप स0अ0 के जुस्दे अतहर से मस कर चुकी है तौ मैं चाहता हूं कि यह चादर मेरा कफ़न बने। हज़रत सुहैल बिन साद कहते हैं कि ऐसा ही हुआ जब उनका इन्तिक़ाल हुआ तो उसी चादर में उनको कफ़न दिया गया।

नबवी मिज़ाज:

नबी करीम स0अ0 का ईसार इन्तिहाई आली दर्जे का था। इस सिलसिले में अजीब–अजीब तरह के वाक़्यात है। बद्दुओं ने तो कोई कसर ही न छोड़ी थी। कोई बद्दू कहता कि ऐ मुहम्मद! अल्लाह तआला ने तुम्हें जो माल दिया है, उस माल में से हमें भी दो। इन बद्दुओं में बाज़ मुनाफ़िक़ भी होते थे जिनका मक़सूद आप स0अ0 को परेशान करना होता था लेकिन आप स0अ0 का तरीक़ा यह था कि किसी को रद्द नहीं फ़रमाते थे, जो भी है वह देना है। आप फ़रमाते थे कि मेरे पास जो कुछ है वह दे ही देता हूं, मैं ख़ुद कहां रखता हूं, रिवायात में आता है कि बाज़ मर्तबा यहां तक होता था कि बद्दू आप स0अ0 के गले की चादर खींच रहा है और उसको मरोड़ रहा है। यहां तक कि आप स0अ0 की गर्दन मुबारक पर उसके निशानात पड़ जाते थे और वह कहता रहता था कि आप हमें माल दीजिए, लेकिन आप बड़ी नर्मी से यही फ़रमाते कि अगर मेरे पास होता तो मैं ज़रूर दे देता। मैं यह बिल्कुल पसंद नहीं करता कि मैं किसी को न दूं और मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता कि लोग मुझे बख़ील कहें।

आला इन्सानी मेयार

इससे एक बात यह भी मालूम होती है कि लोगों के कहने–सुनने का भी थोड़ा–बहुत ख़्याल होना चाहिए। काम तो अल्लाह की रज़ा के लिए होता है लेकिन कोई ऐसा तर्ज़े अमल कि जिसके नतीजे में आदमी बिल्कुल बेहैसियत हो जाए और उसकी हैसियत गिर जाए। यह भी मुनासिब नहीं है। अल्लाह तआला ने आदमी को शराफ़त दी है। यह शराफ़त इन्सानी भी है और इस्लामी भी, एक साहबे ईमान को इस पर क़ायम रहना चाहिए और यह समझकर क़ायम रहना चाहिए कि हम मुसलमान हैं और यह हमारा एक दीनी फ़रीज़ा है। हम ऐसा करेंगे तो इससे एक अच्छा अमली नमूना और एक अच्छी तस्वीर लोगों के सामने आएगी। इसीलिए आप स0अ0 ने फ़रमाया: मैं नहीं चाहता कि लोग मुझे बख़ील कहें, इसका नतीजा था कि आप स0अ0 का हाथ खुला हुआ था और जो भी आप स0अ0 के पास आता था आप स0अ0 उसको नवाज़ते थे।

उस्वा–ए–नबवी

इस हदीस से एक उस्वा यह सामने आया कि बेहतर यही है कि आदमी कभी साएल की बात रद्द न करे अगर उसके पास ज़राए नहीं है .....

(शेष पेज 16 पर)

अपमान व तिरस्कार का बंधन

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

बनी इस्राईल का समन्दर पार करने के बाद इबादत के लिए बुत मुक़र्रर करने का मामला हो या गोशाला परस्ती का, इसी तरह अल्लाह को खुल्लम खुल्ला देखने की मांग हो या मन व सलवा से उकताकर सब्ज़ी, दाल, तरकारी व प्याज़ की मांग करने का मामला। अंदाज़ा यही है कि पूरी क़ौम इसमें शरीक नहीं थी बल्कि उनका एक बड़ा गिरोह यह काम कर रहा था और अब तक उनका मामला कुछ फ़रमाबरदारी और बहुत कुछ नाफ़रमानी का चल र हा था। इसीलिए कुरआन मजीद में अल्लाह तआला की नाराज़गी और सज़ा व तादीब का तज़किरा ज़रूर है। लेकिन उनपर ज़िल्लत थोपने की बात नहीं कही गयी।

कुरआन मजीद में जिस जगह बनी इस्राईल पर ज़िल्लत व बेचारगी थोपने की बात कही गयी है उसकी शुरूआत उस वक़्त से हुई जब उन्होंने अस्ल मक़सद से मुंह मोड़ा और उसमें कुछ लोगों को छोड़कर पूरी क़ौम का मुजरिमाना किरदार रहा। उनको दरअस्ल अपनी सरज़मीन को आबाद करना था और वहीं तमाम एहकामाते इलाहिया का निफ़ाज़ भी करना था। लेकिन जब उनसे इसकी मांग की गयी और अल्लाह तआला के इस फ़रमान के हवाले से मुतालिबा किया गया कि वह मुक़द्दस सरज़मीन अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है, इसलिए वहां जाओ तो पूरी क़ौम एक ज़बान होकर चिल्ला उठी कि हमसे यह नहीं हो सकता। अंदाज़ा यह है कि यह उनकी इज्तिमाई सबसे बड़ी हमागीर नाफ़रमानी थी जो हज़रत मूसा अलै0 के सामने खुले तौर पर की गयी। इस पर अल्लाह तआला का गुस्सा भड़क उठा। हज़रत मूसा अलै0 ने पूरी क़ौम से अलाहदगी अख़्तियार की। अब तक माफ़ी तलाफ़ी, रिआयत और दरगुज़र का जो अंदाज़ था वह बदल गया, इसलिए कि यह क़ौमी ख़यानत थी और अपने अस्ल मक़सद से खुला हुआ इन्हिराफ़ था। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को यह दुआ या बद्दुआ करनी पड़ी "परवरदिगार मैं बस अपना और अपने भाई का अख़्तियार रखता हूं तो हमारे और उन फ़ासिक़ लोगों के बीच जुदाई डाल दे।" (सूरह माइदाः 25)

बस यहां से बनी इस्राईल पर जो ज़िल्लत व बेचारगी थोपी गयी वह आज तक जारी है। दरमियान में अल्लाह के एहसानात भी हुए लेकिन ज़िल्लत की यह कालिक हटाए न हट सकी। इरशादे इलाही हैः "उन पर ज़िल्लत और बेचारगी थोप दी गयी और वह अल्लाह के ग़ज़ब में जा पड़े। यह इस वजह से कि वह अल्लाह की आयत को ठुकराते थे और नाहक़ नबियों को क़त्ल करते थे। यह इस वजह से कि वह सर चढ़ गए और वह हद से आगे बढ़ जाया करते थे।" (सूरह बक़राः 61)

"ज़रब" का आम मफ़हूम मारने का है, इस लिहाज़ से "ज़ुरिबत अलैहिमुज़्ज़िल्लतु" का मतलब यह हुआ कि उन पर ज़िल्लत मार दी गयी, थोप दी गयी। गोया उस चीज़ से दामन छुड़ाना उनके लिए मुमकिन न रहा। यह ताबीर कुरआन करीम ने दो जगह इस्तेमाल की है और दोनों जगह बनी इस्राईल से यहूद मुराद हैं।

"ज़िल्लतु" हिक़ारत, पस्ती और कमज़ोरी किसी के दबाव पर झुकाव की कैफ़ियत को "ज़िल्लत" कहा जाता है।

"अलमसकनतु" बेचारगी, कमज़ोरी और किसी के सामने झुकने को "मसकनत" कहा जाता है। इसका मतलब हरकत का बन्द होना है। चूंकि मिस्कीन बेचारा माली लिहाज़ से इतना कमज़ोर होता है कि गोया किसी हरकत के लायक़ ही नहीं रहता, इसलिए उसके "मिस्कीन" कहा जाता है। ज़िल्लत का ताल्लुक़ अन्दर से ज़्यादा होता है और मसकनत का ताल्लुक़ बाहर से कुछ ज़्यादा मालूम होता है। जिल्लत के साथ मसकनत को लाकर अल्लाह ने यह बता दिया कि वह ज़ाहिर बातिन दोनों एतबार से पस्त कर दिए गए। इन्तिहाई बेक़ीमत, बेवक़अत और हक़ीर बना दिए गए।

कुरआन मजीद में दूसरी जगह अल्लाह तआला ने यह भी बता दिया है कि उनको अगर अल्लाह का सहारा या इन्सानों का सहारा मिल जाए तो वक़्ती तौर पर उनकी ज़िल्लत व बेचारगी कुछ हट सकती है। इरशाद हैः "उनपर ज़िल्लत थोप दी गयी, जहां भी यह पाए जाएं (यानि दुनिया का हर कोना उनके लिए जाए ज़िल्लत है) हां अल्लाह की रस्सी और लोगों की रस्सी के ज़रिए उनकी ज़िल्लत वक़्ती तौर पर छुप सकती है और यह

अल्लाह के ग़ज़ब से जा पड़े और उन पर बेचारगी भी दे मारी गयी।'' (आले इमरानः 112)

अल्लाह का सहारा मिलने का मतलब उनका इस्लाम कुबूल करना है। इसी सूरत में इनकी ज़िल्लत इज़्ज़त में बदल जाएगी। इसी तरह अल्लाह की तरफ़ से कुछ मुद्दत उनको सांस लेने की मिल जाए तो यह भी अल्लाह का सहारा क़रार दिया जा सकता है। दूसरी तरफ़ अगर कोई बड़ी ताक़त उनकी सरपरस्ती करे (जिसे लोगों का सहारा किया गया है) तो फिर कुछ देर के लिए उनकी तार–तार इज़्ज़त की कुछ मरहम पट्टी हो सकती है। आजकल इत्तिफ़ाक़ से वही ज़माना चल रहा है। जबकि अमरीका और यूरोप अपनी साख दांव पर लगाकर उनकी साख बचाने की कोशिशों में हैं। बस आरज़ी इज़्ज़त का पर्दा सरकने की देर है, अस्ल ज़िल्लत की स्याही एक बार फिर उनके चेहरों पर थोपी जाएगी। यह बात क़ाबिले ज़िक्र है कि जब ''जबलुल्लाह'' के अस्ल वारिस या अमीन यानि अहले इस्लाम ''जबलुल्लाह'' को मज़बूती से नहीं थामेंगे तो उनकी इबरत के लिए अल्लाह की रस्सी दुश्मनों के लिए ढीली की जाती है, और उन पर ग़ैरों को मुसल्लत कर दिया जाता है। कुरआन इस पर शाहिद है। अफ़सोस है कि हम लोग फ़िल वक़्त इसी वक़्त से गुज़र रहे हैं जब अल्लाह की रस्सी दुश्मनों के लिए ढीली कर दी गयी।

बहुत से लोगों के ज़हन में यह शुब्हा आ सकता है कि यहूद तो हमेशा मालदार रहे हैं, यहां तक कि जब उनकी हुकूमत नहीं बनी थी उस वक़्त भी बड़े मालदार थे फिर मसकनत थोपने का क्या मतलब है?

इसका एक जवाब यह दिया गया है कि यहूद में जो मालदार हैं वह बेपनाह दौलत के मालिक हैं लेकिन उनकी अक्सरियत ख़स्ताहाल लोगों पर मुस्तमिल है। अलबत्ता हम मौजूदा दौर में देखते हैं तो उनमें एक मुख़्तसर तादाद को छोड़कर बक़िया सब अच्छे–ख़ासे मालदार हैं, लिहाज़ा इश्काल अपनी जगह पर क़ायम है, उसका मुनासिब जवाब यही है कि मसकनत हक़ीक़त में बेचारगी को कहते हैं, माल की कमी मसकनत का सबब हो सकती है लेकिन मसकनत की हक़ीक़त नहीं। हमारा मुशाहिदा है कि कितने ऐसे माली लिहाज़ से कमज़ोर लोग हैं जो ग़ैरत व ख़ुद्दारी में मिसाल नहीं रखते। पूरे वक़ार और इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी बसर करते हैं, वह टूट सकते हैं लेकिन झुक नहीं सकते और कितने ऐसे मालदार हैं जिनमें ख़फ़्त और गिरावट नज़र आती है, उनकी एक–एक अदा से मसकनत टपकती है। ऐसे लोग निहायत दर्जा तमाअ, हरीस और बुज़दिल होते हैं। कोई छोटा सा मामला पेश आ जाए तो क़दमों पर लोटने के लिए तैयार। यहां इस आयत में वही मसकनत मुराद है। अलामते मसकनत यानि माल की कमी भले न भी पायी जाए लेकिन हक़ीक़त में बेबसी व बेकसी उन पर थोप दी गयी है इसलिए बहुत मालदार होने के बावजूद यहूद ज़लील होते रहे, हर जगह से निकाले जाते रहे, दर–बदर की ठोकरें खाना उनके मुक़द्दर में लिख दिया गया। फ़िलवक़्त लोगों के सहारे कुछ इज़्ज़तदार नज़र आते हैं, लेकिन ज़िल्लत व मसकनत का मकरूह चेहरा छिपाए नहीं छिप रहा है।

''बा वा बिग़ज़बि मिनल्लाहि'' का मतलब यह है कि उन्होंने ग़ज़बे इलाही को अपना ठिकाना बना लिया। इसमें दवाम और तसलसुल और इस्तक़रार का मफ़हूम पाया जा रहा है। गोया यह लोग हमेशा ज़ेरे इताब रहेंगे और अपनी करतूतों की पादाश में मुस्तक़िल अल्लाह की लानत और ग़ज़ब के मुस्तहिक़, इसीलिए हदीस पाक में इनकी सिफ़त ही ''जिन पर अल्लाह का गज़ब साबित है'' क़रार दी गयी।

''ज़ुरिबत अलैहिमुज़्ज़िल्लतु वल मसकनतु'' यही दोनों ताबीरात दवाम और हमेशगी की तरफ़ इशारा करती हैं। इसकी वजह ख़ुद कुरआन ने कुफ़्र, क़त्ले अम्बिया, अस्यान व सरकशी और हद को फलांगना क़रार दिया है। यह बात मलहूज़ रहे कि यहां हुक्म अक्सरियत पर लगाया जा रहा है और उनकी मिज़ाजी ख़राबी और बदबातिनी को ज़ाहिर किया जा रहा है वरना यह हर कोई जानता है कि हज़रत मूसा के बाद इसमें मुसलसल पैग़म्बरों का सिलसिला जारी रहा। अहले हक़ पैदा होते रहे। अइम्मा व पेशवा जन्म लेते रहे। इस्लाह की कोशिश मुस्तक़िल जारी रही। एक तादाद हक़ पर क़ायम रही। यह सारे काम होते रहे लेकिन नफ़्स परस्ती, बदतीनती, हसद और मासियत पसंदी इस क़द्र जड़ पकड़ चुकी थी कि हर सही बात बताने वाला उनको कांटे की तरह खटकता और उनकी आख़िरी तमन्ना यह होती कि किसी तरह इसका वजूद ही ख़त्म कर दिया जाए और इस सिलसिले में सिर्फ़ अम्बिया ही नहीं बल्कि जो भी अदल व इन्साफ़ की फ़िज़ा आम

ज़कात के कुछ मुतफ़र्रिक़ मसाएल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

1. जब पूरा माल सदक़ा कर दिया:

ज़कात की अदायगी शरअन उस वक़्त तक नहीं मानी जाती जब तक मुस्तहिक़ को माल देते वक़्त ज़कात की नियत न हो। लेकिन अगर किसी साहिबे निसाब ने साल पूरा होने के बाद पूरा माले निसाब सदक़ा कर दिया तो उसके ज़िम्मे से उस निसाब का फ़रीज़ा साक़ित हो जाएगा। (हिन्दिया)

2. पेशगी ज़कात अदा करना:

अगर कोई शख़्स साहिबे निसाब है तो वह एक साल या कई साल की पेशगी ज़कात निकालना चाहे तो निकाल सकता है लेकिन अगर बाद में माल में इज़ाफ़ा हो गया तो उसकी ज़कात अलग से निकालनी होगी। (हिदाया)

3. गिरवी रखी हुई चीज़ की ज़कात:

अगर ज़कात के माल में से कोई चीज़ चाहे वह ज़ेवर हो या कोई और चीज़ किसी क़र्ज़ वग़ैरह के बदले में गिरवी रखी हुई है तो उसकी ज़कात न राहिन (गिरवी रखने वाले) पर होगी न मुरतहिन (जिसके पास सामान गिरवी रखा गया हो) पर, इसलिए कि ज़कात उसी वक़्त वाजिब होती है जब मिल्कियते ताम्मा पायी जाए और गिरवी रखे हुए सामान पर किसी को भी मिल्कियते ताम्मा हासिल नहीं है। राहिन सामान का मालिक तो है लेकिन सामान उसके क़ब्ज़े में नहीं है और मुरतहिन सामान पर क़ाबिज़ है लेकिन उसको सामान की मिल्कियत हासिल नहीं है फिर जब राहिन क़र्ज़ की अदायगी करके सामान को छुड़ा ले तब भी पिछले सालों की ज़कात उस पर वाजिब नहीं होगी। (शामी)

माले तिजारत की ज़कात में फ़रोख़्त की क़ीमत का एतबार होगा:

माले तिजारत की ज़कात में एक अहम मसला यह भी है कि ख़रीदारी के दिन की क़ीमत का एतबार नहीं किया जाएगा बल्कि एतबार उस सामान की ज़कात निकालने के दिन की क़ीमत का किया जाएगा यानि मालियत उस दिन की मोतबर होगी जिस दिन आप ज़कात का हिसाब कर रहे हैं, जैसे: एक प्लाट तिजारत के लिए आपने एक लाख रुपये में ख़रीदा था और आज उस प्लाट की क़ीमत दस लाख रुपये हो गयी, अब दस लाख पर ढ़ाई फ़ीसद के हिसाब से ज़कात निकाली जाएगी, एक लाख पर नहीं निकाली जाएगी, इसी तरह ख़रीद की क़ीमत के बजाए फ़रोख़्त की क़ीमत का एतबार किया जाएगा, हां फुटकर के बजाए होल सेल के एतबार से क़ीमत का अंदाज़ा लगाना जाएज़ है। (बदाए)

सोने–चांदी में भी फ़रोख़्त की क़ीमत का एतबार होगा:

सोने–चांदी में सोनार के यहां से ज़ेवरात ख़रीदें तो क़ीमत ज़्यादा रहती है और बेचे जाएं तो उसकी क़ीमत क़द्रे कम होती है, तो चूंकि सोने–चांदी में ज़कात अस्लन वज़न के एतबार ही से होती है कि चालिस ग्राम चांदी में एक ग्राम, सौ ग्राम में ढाई ग्राम और शरीअत की तरफ़ से अस्लन इसी वज़न का एतबार है, लिहाज़ा क़ीमत से अदायगी करते वक़्त उसी की फ़रोख़्त वाली क़ीमत का एतबार होगा, जिस क़ीमत पर ख़रीदा था, उसका एतबार नहीं होगा। (शामी)

यह भी वाज़ेह रहे कि अगर अमवाले तिजारत की क़ीमत अलग–अलग शहरों में मुख़्तलिफ़ हो जाती हो तो माल जहां पर मौजूद हो, वहां की क़ीमत का एतबार किया जाएगा, जहां पर ज़कात देने वाला मौजूद है, वहां की क़ीमत का एतबार नहीं किया जाएगा। (शामी)

हराम माल में ज़कात:

जो माल किसी हराम तरीक़े से हासिल किया गया, जैसे: सूद, रिश्वत या ग़सब वग़ैरह के ज़रिए, इसका हुक्म यह है कि मालिक मालूम हो तो मालिक पर लौटाना वाजिब है और मालिक मालूम न हो तो ग़रीबों पर सदक़ा करना ज़रूरी होता है, किसी भी सूरत में यह माल हासिल करने वाले की मिल्कियत में दाख़िल नहीं होता, लिहाज़ा उस माल पर ज़कात वाजिब नहीं है। (शामी)

साल मुकम्मल होने के बाद माल का ज़ाया हो जाना:

अगर साल पूरा होने के बाद पूरा माल चोरी हो गया या किसी और तरीक़े से ज़ाया हो गया तो उसकी ज़कात माफ़ हो जाएगी, लेकिन अगर ख़ुद माल को हलाक और ज़ाया कर दिया तो ज़कात माफ़ नहीं होगी, जब भी बाद में उसके पास माल आए ज़कात अदा करे।

जानवरों की ज़कातः

अगर कोई जानवरों की ख़रीद व फ़रोख़्त का काम करता है तो उन जानवरों को माले तिजातर क़रार दिा जाएगा और पीछे बताया जा चुका है अमवाले तिजारत की मालियत छः सौ बारह ग्राम चांदी के बराबर हो जाए और उस पर साल गुज़र जाए तो ज़कात वाजिब हो जाएगी और उनकी कुल मालियत का चालिसवां हिस्सा निकालना वाजिब होगा। अगर कोई इस तरह तिजारत करता हो तो चाहे जिस जानवर की तिजारत कर रहा हो तो सबमें उसी एतबार से ज़कात वाजिब होगी। (हिन्दिया)

और अगर तिजारत के बजाए जानवर पालने का मक़सद यह हो कि उनका दूध हासिल करेंगे और नस्ल बढ़ांएगे तो उनकी ज़कात तभी वाजिब होगी जब उनमें मुन्दरजा ज़ेल शर्तें पायी जा रही होः

1. वह जानवर ऊंट, गाय, भैंस, भेड़ या बकरी हो। उन जानवरों के अलावा वह बक़िया जानवरों पर ज़कात तभी वाजिब होगी जब उनकी तिजारत की जाए। (तातारख़ानिया)

2. वह जानवर साल के अक्सर हिस्से में चारागाह वग़ैरह में चरकर गुज़ारते हों, अगर आधे साल या उससे कम चरकर गुज़ारा करते तो ज़कात वाजिब नहीं होगी, इसी तरह जिन जानवरों को घर और बाड़े वग़ैरह में रखकर चारा दिया जाता है, जैसे आजकल जानवरों की डेरियों में होता है तो उनकी ज़कात वाजिब नहीं होगी। (शामी)

3. उन जानवरों को पालने का मक़सद उनसे दूध हासिल करना या उनकी नस्ल चलाना हो, अगर गोश्त खाने, सवारी करने या खेत जोतने के लिए पाला हो तो उन जानवरों की ज़कात वाजिब नहीं होगी। (शामी)

4. यह जानवर इतने सेहतमंद हों कि उनकी बढ़ोत्तरी मुमकिन हों, अगर यह जानवर बीमार, लूले, लंगड़े और मरियल हों कि उनमें इज़ाफ़ें का इमकान न हो तो उनमें ज़कात वाजिब नहीं होगी। (शामी)

5. उन जानवरों में से हर एक का अलग निसाब है, वह निसाब की तादाद में हों और उन पर साल गुज़र जाए (निसाब के बारे में मुख़्तसर बहस आगे आ रही है) (हिन्दिया)

6. वह जानवर सबके सब बच्चे न हों, बल्कि उनमें कोई न कोई बड़ा जानवर भी हो, अगर सबसे सब बच्चें हों तो उनपर ज़कात वाजिब न होगी। (बदाए)

अलबत्ता अगर यह जानवर नर–मादा दोनों या सिर्फ़ नर हों या सिर्फ़ मादा हों तो उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा और बक़िया शराएत पूरी हो रही हो तो उनकी ज़कात वाजिब होगी। (बदाए)

ऊंट की ज़कातः

हदीसों फ़िक़ की किताबों में ऊंट की ज़कात की तवील बहसें आयीं हैं इसलिए कि अरबों के यहां ऊंट सबसे ज़्यादा अहमियत वाला जानवर था, लेकिन हमारे यहां एक तो ऊंट कम पाए जाते हैं दूसरे अगर कुछ हों भी तो बक़िया शर्तें मुश्किल ही से पायी जाती हैं, लिहाज़ा हम इसका निसाब क़द्रे इख़्तिसार से करना मुनासिब समझते हैं।

गाय–भैंस का निसाबः

गाय–भैंस को शरअन एक जिन्स क़रार दिया गया है और इनके निसाब की तफ़सील यह है कि किसी के पास अगर तीस से कम गाय–भैंस हों तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं है। इनमें ज़कात तभी वाजिब होगी जब उनकी तादाद तीस या उससे ज़्यादा हो, फिर अगर कोई तीस से लेकर उन्तालिस तक गाय–भैंस का मालिक हो तो उस पर तबीअ या तबीआ (एक साला गाय या भैंस चाहे नर हो या मादा) वाजिब होगा और अगर चालिस से लेकर उन्सठ तक गाय–भैंस का मालिक हो तो दो साला नर या मादा, गाय या भैंस वाजिब है और साठ से लेकर उन्हत्तर तक गाय–भैंस का मालिक हो तो दो–एक साला गाय–भैंस चाहे नर हो या मादा देना होगा। इस सिलसिले में ज़ाब्ता यह है कि जब तादाद साठ जानवरों से बढ़ जाए तो हर तीस जानवर पर एक साल और हर चालिस जानवर पर दो साला नर या मादा देना होगा। (हिन्दिया)

चुनान्चे हज़रत अली रज़ि0 की रिवायत अबूदाऊद में आयी है कि गाय–भैंस में हर तीस जानवर पर एक साला और हर चालिस पर दो साला नर–मादा वाजिब है।

ज़कात देने के कुछ मुतफ़र्रिक़ मसाएलः

ऊंट का निसाबः

अगर किसी के पास पांच ऊंट हैं तो उन पर ज़कात वाजिब नहीं है, लेकिन अगर किसी के पास पांच से लेकर

नौ ऊंट तक हों तो उसके ऊपर एक साल की बकरी या बकरा वाजिब होगा, और अगर दस से लेकर चौदह तक ऊंट का मालिक है तो उस पर इसी तरह के दो बकरे या बकरियां वाजिब होंगी, और अगर पन्द्रह से लेकर उन्नीस तक ऊंटों का मालिक है तो तीन बकरे या बकरियां वाजिब होंगी, और बीस से लेकर चौबिस तक ऊंटों का मालिक है तो चार बकरे या बकरियां वाजिब होंगी।

अगर पच्चीस से लेकर पैंतीस तक ऊंटों का मालिक है तो उस पर बिन्ते मख़ाज़ (यानि एक साल की मादा ऊंटनी) देना वाजिब होगा और छत्तिस से लेकर 45/ तक ऊंटों का मालिक है तो बिन्ते लबून यानि दो साल की मादा ऊंटनी देना वाजिब होगा, 46/ से लेकर 60/ तक ऊंटों का मालिक है तो हक़्क़ा यानि तीन साल की मादा ऊंटनी देना वाजिब होगा। 61/ से लेकर 75/ ऊंटों का मालिक है तो जिज़्आ यानि चार साल की मादा ऊंटनी वाजिब होगी। (इसी तरह तादाद बढ़ने पर ऊंटों की ज़कात का तफ़सीली निज़ाम हदीसों और फ़िक़ में आया है, हम इख़्तिसार के पेशे नज़र इस पर इक्तिफ़ा करते हैं, ज़रूरत पड़ने पर इसकी मालूमात हासिल की जा सकती हैं)

चुनान्चे बुख़ारी में हज़रत अनस रज़ि0 बिन मालिक रज़ि0 की तफ़सीली हदीस में है: "हर पांच ऊंट में एक बकरी होगी, फिर जब पच्चीस ऊंट से 35 तक हो जाएं तो एक मादा बिन्ते महाज़ वाजिब है, फिर जब 36/ से 45/ तक हो जांए तो उनमें एक मादा बिन्ते लबून वाजिब है, फिर जब 45/ से साठ हो जाएं तो उनमें से एक जुफ़्ती के लाएक़ हक़्क़ा वाजिब है और फिर जब 61/ से 75/ हो जाएं तो उनमें एक जिज़्आ होगा।"

बकरी का निसाब:

बकरी चालिस से कम हों तो उन पर ज़कात नहीं है, लेकिन अगर किसी के पास चालिस से लेकर 120 तक बकरियां हों तो तो उस पर एक बकरी या दो बकरा देना वाजिब है और अगर 121 से 200 तक हों तो दो बकरियां वाजिब हैं, 201 से 399 तक तीन बकरियां वाजिब हैं, 400 से 499 तक चार बकरियां वाजिब हैं, फिर सौ बकरी पर एक बकरी का इज़ाफ़ होता रहेगा। (शामी)

शेष: त्याग व समानता क्या है?

..... और सिर्फ़ उसकी अपनी ज़रूरत की चीज़ है तो वह अपने पास रख ले, इसमें कोई हर्ज नही है। लिहाज़ा आला दर्जे का मक़ाम यह है कि अगर किसी ने किसी चीज़ की ख़्वाहिश की है तो अगर दे सकता है तो उसकी ख़्वाहिश पूरी कर दे और उसको वह चीज़ दे दे। हज़रत मौलाना अली मियां नदवी रह0 की अहिल्या साहिबा की यही सिफ़त थी कि अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनकर आ गयीं और किसी ने ज़रा भी कह दिया कि आप पर यह कपड़ा बड़ा अच्छा लग रहा है तो फ़ौरन पूछती कि क्या तुम्हें दे दूं, अब अगर जवाब में उसने कह दिया हां तो फ़ौरन अन्दर गयीं और पुराना कपड़ा पहन लिया और नया कपड़ा उसको दे दिया। ऐसा कई बार हुआ। इसका नतीजा यह था कि उनके पास एक दो जोड़े से ज़्यादा कभी नहीं रहते थे। वह दुनिया से बिल्कुल मुस्तग़्ना थीं। हमने दीनार व दिरहम से ऐसा मुस्तग़ना कम लोगों को देखा।

मोमिनाना अख़्लाक़:

यह ऐसी सिफ़त है जो अल्लाह को पसंद है कि आदमी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे और जितना भी ख़र्च कर सके बेहतर है। बार–बार यह सोचना कि यह मांगता रहता है, इसका यही काम है, और इसको ज़रूरत है भी या नहीं याद रहे कि यह उसका अपना अमल है। एक तरफ़ उसको बता दिया गया है कि क्या करना है और साफ़–साफ़ कह दिया गया है कि मांगने वालों के साथ कल क़यामत में बहुत बड़ा सुलूक होने वाला है। क़यामत के रोज़ उनके चेहरों पर गोश्त का एक टुकड़ा भी नहीं होगा। लिहाज़ा वह उनका ज़ाति अमल है लेकिन देने वाले का तर्ज़े अमल क्या होना चाहिए, वह भी कुरआन मजीद में बयान कर दिया गया है। इरशाद है:

"और उनके मालों में मांगने वालों, और ज़रूरतमंदो का हक़ होता था जो बेचारा ज़रूरतमंद है उसका हक़ है और एक हक़ साएल का भी है, जो चाहे ज़रूरतमंद न हो लेकिन अगर वह मांग रहा है और आप दे सकते हैं तो अच्छा यही है कि आप उसको दे दें।

तिजारत–ए–नबवी (स0अ0) की नवीयत

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

नबी करीम (स0अ0) की पूरी ज़िन्दगी ईमानवालों के लिए नमूना है। अल्लाह तआला ने आप (स0अ0) की शख़्सियत को वह जामिईयत अता की है जिसमें कोई दूसरा शरीक नहीं। आपके बचपन के समय से लेकर वफ़ात के आख़िरी दिन तक कोई लम्हा ऐसा नहीं जो क़ाबिले तक़्लीद न हो। आप (स0अ0) ने जिस वक़्त मैदान–ए–तिजारत में क़दम रखा, उस ज़माने में तिजारत के मुख़्तलिफ़ नाजाएज़ तरीक़े राएज थे, लेकिन अल्लाह तआला ने आप (स0अ0) को उन तमाम तरीक़ों से महफ़ूज़ रखा, जबकि घर में चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब उन्हीं तरीक़ों पर क़ाएम थे, मगर इस सिलसिले में नबी (स0अ0) की तबियत फ़ितरी निज़ामे तिजारत की तरफ़ माएल हुई और ख़ारजी या दाख़िली किसी भी शख़्सियत का असर क़ुबूल न किया।

हुज़ूर अकरम (स0अ0) यतीमी के बंधन में रोज़े अव्वल से मरबूत थे, इसलिए यह मुमकिन न था कि एक वाफ़िर मिक़्दार में ख़ुद अपना माल लगाकर सरमाया दाराने मक्का के साथ तिजारत करते, लेकिन आप (स0अ0) बाहिम्मत, बाहौसला, ग़य्यूर, ताक़तवर और मेहनती थे, इसलिए यह बात ऐन मुनासिब कि आप अपनी मेहनत से कस्बे माल करते, जोकि साबिक़ा अम्बिया की भी सुन्नत रही है, चुनान्चे आप (स0अ0) ने कमसिनी में उजरत पर अहले मक्का की बकरियां चराईं, और इस तरह इजारे की जाएज़ शक्ल पर अमल करके तमाम इन्सानियत को एक बेहतरीन उस्वा अता फ़रमाया।

आप (स0अ0) ने जब जवानी की दहलीज़ पर क़दम रखा तो शफ़ीक़ चचा अबू तालिब के मशवरे से आप (स0अ0) ने ख़दीजा के माल को लेकर मुल्कों–मुल्कों तिजारत की और बहुत से सफ़र किए। रसूलुल्लाह (स0अ0) के इन तिजारती असफ़ार की शक्ल मुज़ारबत की थी, इसलिए कि हज़रत ख़दीजा के मुताल्लिक़ मशहूर बात थी कि वह अपना माल मुज़ारिबत पर देती थीं:

"हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) बाइज़्ज़त, दौलतमंद और ताजिर ख़ातून थीं, उनका कारवाने तिजारत शाम जाता था और वह कुरैश के कारवाने तिजारत के बराबर होता था और वह लोगों को उजरत पर रखती थीं और उनको मुज़ारबत पर माल देती थीं। (तबक़ात इब्ने साद: 16/8)

हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) ने जब नबी करीम (स0अ0) की दयानतदारी और अमानतदारी पर चर्चे सुने, तो ख़्याल हुआ कि अगर मुहम्मद (स0अ0) मेरा माले तिजारत लेकर सफ़र करें, तो मैं उन्हें मुनाफ़े में से उन्हें दोगुना अता करूंगी, जो मैं दूसरों को देती हूं। यह ख़ुशकुन ख़बर जब चचा अबूतालिब को पहुंची तो उन्होंने सआदतमंद भतीजे को तिजारत का मशवरा दिया और आप (स0अ0) हज़रते ख़दीजा का माल लेकर मुल्के शाम गए, आप (स0अ0) का यह कामयाब सफ़र मुज़ारिबत की ही नवीयत पर मुबनी था, इसमें हज़रत ख़दीजा ने हस्बे वादा दूसरे मुज़ारिबीन के मुक़ाबले में आप (स0अ0) को ज़्यादा मुनाफ़ा दिया था, इब्ने साद की रिवायत है: "उन्होंने (हज़तर ख़दीजा (रज़ि0)) हुज़ूर (स0अ0) को उससे दोगुना माल अता किया जो उन्होंने तय किया था।"

बहुत से लोगों का मानना है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की तिजारत मुज़ारिबत से ज़्यादा इजारे की शक्ल में थी, यानि तिजारत में मुनाफ़े के एतबार से फ़ीसद मिलना तय नहीं था, बल्कि आप (स0अ0) ने तय उजरत पर तिजारत फ़रमायी थी, मुस्तदरक हाकिम की रिवायत है:

"हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) ने रसूलुल्लाह (स0अ0) को बतौर उजरत (मक़ाम) जिर्श के दो सफ़र कराए, और हर सफ़र एक ऊंट के एवज़ था।" (मुस्तदरक हाकिम: 3448)

मुमकिन है कि बहुत से सफ़र आप (स0अ0) ने बतौर उजरत भी किए हों, जोकि तिजारत की एक जाएज़ शक्ल है, लेकिन यह बात ज़्यादा क़रीने क़यास है कि आप (स0अ0) मुज़ारिबत पर तिजारत करते थे, और जब तिजारत में ख़ूब नफ़ा होता था तो हज़रत ख़दीजा आकर अम्मा ऊंट वग़ैरह से भी नवाज़ती थीं, जिसको इजारा की सूरत पर महमूल किया गया है।

रसूलुल्लाह (स0अ0) को तिजारती सफ़र में ख़ूब नफ़ा हासिल हुआ, और बेअसत से पहले तक आप (स0अ0) हज़रत ख़दीजा (रज़ि0) का माल मुज़ारिबत पर लेकर अलग–अलग जगहों पर जाते रहे, लेकिन जब आपकी माली सूरतेहाल मज़बूत हो गयी तो आप (स0अ0) ने मुशारिकत पर भी तिजारत की, यानि कुछ लोगों के साथ अपना पैसा मिलाकर तिजारत की और मुनाफ़े को आपस में बराबर तक़्सीम कर लिया।

पश्चिमी सभ्यता तथा उसकी विशेषताएं

मुहम्मद नफ़ीस ख़ान नदवी

पश्चिम क्या है:

रोमन साम्राज्य की पराकाष्ठा के समय में वह समय भी गुज़रा है जब शहंशाह की उत्तराधिकार एक गंभीर समस्या बन गयी थी। सेना का रसूख़ इतना बढ़ गया था कि उसकी मर्ज़ी के बिना किसी को सत्ता प्राप्त नहीं हो सकती थी। कभी सेना की रस्साकशी तो कभी जनता के विद्रोहों ने पूरे साम्राज्य को गृहयुद्धों से की आग में झोंक रखा था। शासन व्यवस्था कमज़ोर होने के कारणा देश की अमन व शांति व्यवस्था भी बदहाल रही। हालात कुछ ऐसे बन रहे थे कि रोमन साम्राज्य इतिहास के पन्नों में दफ़न हो जाए, लेकिन सामने किसी मज़बूत ताक़त के न होने की वजह से रोम केवल गृहयुद्ध की भेंट चढ़ता रहा। ऐसे हालात में "ड्यूक्लेटियन" (Diocletian) ने सत्ता प्राप्ति का सफल प्रयास किया तथा सन् 284ई0 में सेना की मदद से वह रोम का बेलगाम सम्राट घोषित हुआ।

"ड्यूक्लेटियन" ने अपने साम्राज्य की स्थिरता तथा गृहयुद्धों से सुरक्षा के मद्देनज़र रोमन साम्राज्य को व्यवस्थानुसार दो क्षेत्र में बांट दिया। एक "पूर्वी रोमन साम्राज्य" (Eastern Roman Empire) कहलाया, यह साम्राज्य इतिहास में "बाईज़ेंटाइन साम्राज्य" (Byzantine Empire) के नाम से भी मशहूर है, दूसरा हिस्सा "पश्चिमी रोमन साम्राज्य" (Western Roman Empire) कहलाया तथा केवल "पश्चिम" (West) के नाम से भी परिचित रहा।

पूर्व व पश्चिम का यह बंटवारा भौगोलिक रूप से भी किया जाता है। भूमध्य सागर (Mediterranean Sea) में सिसली के दक्षिण से केप सोरेल (Cape Sorell) तथा त्यूनिस की कैप बोन (Cape Bone) के बीच लगभग सौ मील (160 किमी) चौड़ा पानी का रास्ता बन जाता है जिसके कारण प्राकृतिक रूप पर उसका बंटवारा पूर्वी तथा पश्चिमी समन्दरों में हो जाता है। पूर्वी रोम सागर के किनारे स्थित सभी देश "पूर्वी यूरोप" तथा पश्चिमी रोम सागर के किनारे के सभी देश "पश्चिमी यूरोप" कहलाते हैं।

पूर्वी यूरोप में वह इलाक़े शामिल थे जो कभी यूनान (Greece) के साम्राज्य का हिस्सा थे। इसीलिए पूर्व में यूनानी सभ्यता परवान चढ़ी जिसकी बुनियादें भौतिकवाद पर आधारित थीं। यूनानियों का ज्ञान व दर्शन, साहित्य व शायरी बल्कि धर्म भी उनकी भौतिकवादी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, यहां तक कि ईश्वरीय गुण तथा उसकी प्रकृति की अवधारणा भी विभिन्न देवताओं की शक्लों के बिना संभव न था। यूनान की यह सभ्यता वर्तमान पश्चिमी सभ्यता का सबसे पहला दृश्य तथा नमूना थी।

पश्चिमी यूरोप में रोमन सभ्यता फली–फूली और लहलहाई। रोमवासियों के स्वभाव में अत्यधिक अतिवाद, राष्ट्रवाद तथा स्वार्थ शामिल था। उनका उद्देश्य इससे ज़्यादा कुछ न था कि उनके लोग संकट व परेशानी से सुरक्षित रहें। वह यद्यपि प्रशासनिक व्यवस्था, साम्राज्य के प्रचार–प्रसार तथा सैन्य गुणों में यूनान से बाज़ी मार ले गए थे लेकिन साहित्य व शायरी, ज्ञान, आनंद तथा सामाजिक सौंदर्य में यूनान ही के आभारी थे, अतः रोम में जो सभ्यता फली–फूली उसमें यूनान की भौतिकवादिता के साथ रोम का अतिश्योक्तिप्रिय स्वभाव तथा पक्षपातपूर्ण देशप्रेम के तत्व भी शामिल थे।

रोमन साम्राज्य में जब ईसाई धर्म प्रचलित हुआ तथा उसे वर्चस्व प्राप्त हुआ तो उसके बंटे हुए क्षेत्रों के एतबार से ईसाई धर्म का भी बंटवारा हुआ तथा पूर्वी ईसाई धर्म (Eastern Christianity) और पश्चिमी ईसाई धर्म (मेजमतद बैतपेजपंदपजल) के नाम से प्रसिद्ध व प्रचलित हुई। पूर्व तथा पश्चिम अपने वैचारिक विरोधाभास के आधार पर अपने केन्द्रीय क्लीसाओं (गिरिजाघर) के अधीन भी थे। इस आधार पर पूर्व के ईसाई आर्थोडॉक्स (Orthodox) पश्चिम के ईसाई "कैथोलिक" (Catholic) कहलाए।

रोमन सभ्यता के साथ–साथ "रोम के क्लीसाओं" (Roman Church) ने परवरिश पायी। लगभग पांच सदी गुज़रने के बाद 4/सितम्बर 476ईसवी को रोमन साम्राज्य का यह पश्चिमी हिस्सा जर्मन क़ौमों के हाथों पराजित होकर इतिहास के पन्नों में सुरक्षित हो गया।

जर्मन की आक्रमणकारी क़ौमें सभ्यता तथा संस्कृति से ख़ाली तथा धार्मिक भावनाओं से बिल्कुल अपरिचित थीं, अतः जल्द ही उन विजयी क़ौमों ने क्लीसा की चौखट पर सर झुका दिया तथा क्लीसा की गुलामी की जंजीर अपने गले में डालकर समर्पण की राह अपना ली। पश्चिम की इस तबाही तथा क़ौमों की पिसाई के बाद रोम के क्लीसा ही रोमन सभ्यता के वारिस हुए। उसने अपने शासनकाल में एक नये समाज को जन्म दिया जो "पश्चिमी समाज" (Western Society) कहलाया तथा उसके अधीन जो सभ्यता परवान चढ़ी वह "पश्चिमी सभ्यता" (Western Civilization) के नाम से जानी गयी।

क्लीसा ने अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में जिस प्रकार के समाज का नवनिर्माण किया वह रोमन सभ्यता की विशेषताओं के बाद पूरी तरह ईसाई तथा सांसारिक मामलों में क्लीसा के आदेशों का सख़्ती से पाबन्द था। इस समाज में क्लीसा ही क़ानून तथा व्यवहारिक नियमों को लागू करने का ज़िम्मेदार था। सभ्यता तथा संस्कृति का वही रक्षक तथा इसमें हस्तक्षेप व बदलाव का वही पूर्ण रूप से अधिकारी था। यदि सामाजिक अमन व शांति किसी ग़ैर ईसाई की आवाज़ से ज़रा भी भंग होती तो क्लीसा के इशारे पर पश्चिम की सारी ताक़तें उसके ख़िलाफ़ लामबन्द हो जातीं। इस तरह क्लीसा के इक़बाल ने रोमन सभ्यता के स्वरूप में नुमायां बदलाव पैदा किया, यद्यपि उसकी बुनियादें उसी प्रकार क़ायम रहीं।

पश्चिमी सभ्यता की विशेषताः

वर्तमान पश्चिमी सभ्यता का वंश यूनान तथा रोम की सभ्यता से संबंध रखता है जो कि हज़ारों साल पुरानी है। इस लम्बे समय में पश्चिमी सभ्यता विभिन्न चरणों तथा अनुभवों से गुज़रती रही जिनमें मध्यकाल का अज्ञानता का युग, पुनर्जागरण की गहमा–गहमी तथा दौरे अक़्लियत की असबाब परस्ती भी शामिल है। इस तरह पश्चिम ने जो सभ्यता दुनिया के सामने प्रस्तुत की है उसका विश्लेषण निम्नलिखित विशेषताओं के साथ उसको और अधिक स्पष्ट करता हैः

1– अतीन्द्रिय में संशय तथा उनका इनकारः

यूनानी सभ्यता का एक मूलभूत तत्व अतीन्द्रिय (Imperceptiable) में शक व शुब्हे का था अतः यूनानियों के निकट हर ऐसी वस्तु का एक ज़ाहिरी लिबास होना आवश्यक था। यहां ख़ुदा के वजूद व उसके गुणों की अवधारणा भी उसके बिना संभव न थी। अतः उन्होंने ख़ुदाई गुंणों वाले बुत बनाए तथा उनके पूजाघरों का निर्माण किया। कोई धन का देवता, कोई कृपा का, कोई प्रेम का और कोई क्रोध व दण्ड का देवता था। फिर भौतिकवादी शरीर के सभी गुण उन भौतिकवादी देवताओं से संबंधित कर दिए गए और उनके आस–पास क़िस्से–कहानियों का जाल फैला दिया गया।

सोलहवीं सदी ईसवी में पश्चिमी समाज ने क्लीसा की गुलामी की ज़ंजीर अपनी गर्दन से उतार फेंकी जिसके परिणामस्वरूप पश्चिमी सभ्यता की वह सारी विशेषताएं पूरी वेग के साथ सामने आयीं जिन्हें क्लीसा ने अपनी ताक़त से दबाए रखा था। अतः सबसे पहले ईसाई धर्म को ही निशाना बनाया गया और एक–एक अक़ीदे (आस्था) को अक़्ल की कसौटी पर जांचा–परखा गया तथा अतीन्द्रिय को पूरी ताक़त के साथ यह कहकर रद्द कर दिया गयाः रेशनलिस्ट इन्साइक्लोपीडिया का लेखक लिखता हैः

"यह नियम कि धर्म तथा धार्मिक आस्थाओं से संबंधित सभी सवाल इल्लत के आधार पर या निजी बहस व खोज के आलोचनात्मक परिणामों के आधार पर हल होने चाहिए न कि वही (ईशवाणी), सनद (प्रमाण), रिवायत (प्रचलन), जज़्बात, एहसास या ख़्याल की बुनियाद पर।" (रेशनलिस्ट इन्साइक्लोपीडिया)

2– वर्चस्व व अधिपत्य की न समाप्त होने वाली सोचः

रोम की एक मूलभूत विशेषता दूसरी क़ौमों पर अपना अधिपत्य बनाए रखना है। अतः दूसरी क़ौमों पर क़ाबिज़ होकर उनके साधनों, उनकी सेनाओं, उनके खेत–खलियान और उनके शासकों सबको अपने यहां गिरवी रखकर अपने शासन के प्रति वफ़ादार व ख़िदमतगार बनाए रखना पश्चिमी सभ्यता की नुमाया ख़ूबी है। दुनिया में लोगों को गुलाम बनाए रखने का रिवाज बहुत पुराना है लेकिन व्यवस्थित रूप से पूरी की पूरी क़ौम को गुलाम बना लेने का स्वभाव रोमन साम्राज्य की ही विरासत है और इसी स्वभाव ने पश्चिमी सभ्यता में

गुरूर व घमण्ड के वह जरासीम पैदा कर दिए हैं कि दूसरी क़ौमों के अपमान तथा अपने लाभ की ख़ातिर उनकी तबाही ऐसी मामूली घटना है, जिस पर "आई एम सॉरी" कह देना ही काफ़ी है।

मानव इतिहास में क़ौमें हमेशा लूटी जाती होती रहीं मगर "कॉलोनियां" नहीं बनायीं गईं। मग़्रिब का यह उपनिवेशवाद (Colonialism) शुरूआती समय से जारी है, यद्यपि दरमियान में दस–बारह सदियों के लिए इसमें अवरोध अवश्य आया, जिसका कारण पश्चिम की नेक नियत नहीं बल्कि मुस्लिम हुकूमतों के सामने उसकी बेबसी थी कि उस दौरान दुनिया के बड़े हिस्से पर इस्लामी सभ्यता का पूर्ण रूप से अधिपत्य था, मग़्रिब अपने इसी युग को "डार्क एजेस" (Dark Ages) का नाम देता है।

3– बनावटी ख़ुदाओं की खोज:

वास्तविक उपासक के इनकार के बाद मस्नूई ख़ुदाओं के सामने झुकना इन्सान की फ़ितरत है। मग़्रिबी क़ौमों के साथ दुनिया की सारी मुश्रिक क़ौमें इसी वस्फ़ में बाहम मुश्तरक हैं, लेकिन माबूदों की कसरत और उसमें इज़ाफ़ों का तसलसुल सिर्फ़ मग़्रिब के साथ ख़ास है, अहले यूनान व रोमा ने ख़ुदाए हक़ीक़ी के इनकार के बाद अपने ज़हनी ख़ुदाओं की तख़्लीक़ की, जब मसीहियत ने मग़्रिबी तहज़ीब में दस्तक दी तो मुअर्रिख़ीन के बक़ौल रोम ने मसीहियत अख़्तियार कर ली जबकि हक़ीक़त यह है कि मसीहियत को "रोमिया" (Romanise) दिया गया, मसीहियत को क़ुबूल करने वालों ने अपने बुत परस्ताना मिज़ाज और मुश्रिकाना अक़ीदों के साथ मसीहियत को क़ुबूल किया था, जिसके नतीजे में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की शफ़्फ़ाफ़ व पाकीज़ा तौहीद में बुत परस्ती की ग़लाज़ते शामिल हो गयीं। 'मारका–ए–मज़हब व साइंस' का लेखक जे. डब्लू. ड्रेपर (J.W. Draper) लिखता है:

"फ़ातेह और कामयाब जमाअत के साथ जो कोई शरीक हुआ उसे बड़े–बड़े ओहदे और मर्तबे मिलने लगे, इसका नतीजा यह हुआ कि दुनियादार लोग, जिन्हें मज़हब की ख़स बराबर परवाह नहीं थी, मसीहियत के सबसे ज़्यादा जोशीले हामी हो गए, चुनान्चे वह बज़ाहिर मसीही लेकिन बबातिन मुश्रिक व बुत परस्त थे, लिहाज़ा उनके असर की वजह से इसाइयत में बुत परस्ती व शिर्क के अनासिर की आमेज़िश शुरू हो गयी।"

मसीहियत की आमेज़िश और क्लीसा के ग़ल्बे ने मग़्रिब को हज़रत ईसा, मरियम बतूल और रूहुल कुद्स के नाम से कुछ नए बुत फ़राहम कर दिए। रोम के बुत परस्त त्योहारों को बड़े आराम से मसीही तक़द्दुस हासिल हो गया, लेकिन जब क्लीसा के ख़िलाफ़ बग़वातें शुरू हुईं और यूरोप की निशाते सानिया का आग़ाज़ हुआ तो मग़्रिब के इन्तिक़ामी जज़्बे ने उन बुतों को पाश–पाश कर दिया, क़दीम माबूदों का अहया हुआ और मज़ीद ढेरों नए बुत तराशे गए; ड्रार्विनवाद, मार्क्सवाद, कम्यूनिज़्म, पूंजीवाद, रिलेटिज़्म, फेमिनिज़्म जैसे न जाने कितने बुत हैं जिनके सामने अहले मग़्रिब की पेशानियां सज्दा रेज़ हैं।

4– भौतिकवाद:

पश्चिम का शैक्षिक, वैज्ञानिक पराकाष्ठा व उन्नति का दौर वहीं से शुरू होता है जहां मुसलमानों ने पन्द्रहवीं सदी के आख़िर में छोड़ा था, लेकिन इस्लामी दुनिया के विपरीत पश्चिम की हर प्रकार की उन्नतियों की बुनियाद ईसाईयत से बग़ावत पर थी। इस बग़ावत ने यूनान व रोम की सभ्यता की उन छापों को फिर से उभार दिया जिन्हें ईसाई धर्म ने मधिम कर दिया था। इस तरह मज़हब बेज़ारी, शक व तज़बज़ुब, दीनी निज़ाम की तौहीन, धार्मिक कार्यों व रस्मों की बेवक़अती के तत्व इस तौर पर सरगर्म व मुतहर्रिक हुए कि मज़हब व सियासत दोनों की राहें बिल्कुल जुदा हो गयीं और मग़्रिबी तहज़ीब का ऐसा सांचा तैयार हुआ जिसके नज़दीक नेकी और अख़लाक़ी बुलन्दी का मेयार महज़ "मादिदयत" था।

प्रोफ़ेसर जोड (Prof. Joad) मग़्रिबी तहज़ीब की मादिदयत परस्त मिज़ाज परस्त का तज़किरा करते हुए लिखते हैं:

"सदियों से पश्चिम की सोच पर धन के भण्डारण का नियम हावी है। धन प्राप्ति की इच्छा पिछले दो सौ साल से दीगर जुम्ला मुहर्रिकाते अमल से ज़्यादा काम करती रही है क्योंकि धन माल प्राप्त करने का साधन है और ज़ाति मिल्कियत की बहुतात और शान व अज़मत से इन्सान की क़ाबिलियत का अंदाज़ा किया जाता है। सियासियात, अदब, सिनेमा, रेडियो और कभी–कभी क्लीसाओं के मेम्बरों से साल–बसाल अपने पढ़ने–सुनने वालों को यही तालीम दी जाती रही है कि मुहज़्ज़ब क़ौम वही है जिसमें जज़्बा–ए–हुसूल इन्तिहाई तौर पर तरक़्क़ी कर चुका हो।"

जबान की नेकियां

अच्छी बात का हुक्म देना बुरी बात से रोकना

दावत के आदाबः अच्छी बात का हुक्म देने में जो लोग कोताही करते हैं, बुराई होते देखते हैं, मगर उससे रोकते नहीं, अच्छी बात कहने के वक़्त भी अच्छी बात नहीं कहते, इस्लाम व ईमान की दावत नहीं देते और अपनी ज़बान को बन्द रखते हैं, तो अल्लाह व रसूलुल्लाह स0अ0 की नाराज़गी मोल लेते हैं और अपनी ज़बान का हक़ अदा नहीं करते। ऐसे लोगों के लिए बड़ी वईद आती है। हदीस शरीफ़ में यहां तक आया हैः

"जो शख़्स तुम लोगों में से कोई बुराई देखे तो अपने हाथ से रोक दे और अगर उसकी ताक़त नहीं रखता तो अपनी ज़बान से रोके और अगर उसकी भी ताक़त न हो तो अपने दिल में बुरा जाने, और यह ईमान की बड़ी कमज़ोरी है।"

कथनी व करनी में समानता व सत्यता पैदा करने वाले को इसका लिहाज़ रखना बहुत ज़रूरी है कि वह कहने से पहले ख़ुद उस पर अमल करे। कुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला का इरशाद हैः

"ऐ ईमान वालो! वह बात क्यों कहते हो जिस पर तुम ख़ुद अमल नहीं करते। अल्लाह के नज़दीक यह बात बड़ी गुस्से और नाराज़गी की है कि तुम वह कहो जो ख़ुद नहीं करते।"

ब्हुत से लोग तब्लीग़ व दावत का काम नहीं करते तो वह ख़ुद काम नहीं करते, न तो ख़ुद अमल करते हैं, न दूसरों से कहते हैं। मानो वह दो गुनाहों के मुरतकिब हैं, अव्वल ख़ुद नेक काम न करना, दूसरा अपनी ज़बान से इस ज़रूरी काम दावत व तब्लीग़ का न करना।

बहुत से लोगों का हाल यह होता है कि ख़ुद तो नेक होते हैं, नेक काम करते हैं, नमाज़ी होते हैं, रोज़ा रखते हैं, सच बोलते हैं, मगर दूसरों को नमाज़, रोज़ा की नसीहत नहीं करते। न सच के बारे में कहते हैं, अपना काम अपनी नजात के लिए काफ़ी समझते हैं, यह भी बड़ी नादानी की बात है कि ख़ुद तो आग से बचने की कोशिश करें और दूसरे को आग में जलने दें। इसकी मिसाल ऐसी है कि एक नाबीना और आंखों वाला आदमी कुवें पर पहुंचा और आंख वाला सामने कुवां देखकर रुक गया, बैठ गया, और गिरने से बच गया, थोड़ी देर में अंधा आदमी आ गया और कुवें में गिरने लगा, आंखों वाला आदमी ख़ामोश रहा और नाबीना को गिरते, मरते देखता रहा, न हाथ पकड़ कर घसीटा, न ज़बान से रोका, बस दिल से बुरा जानता रहा, उसके बुरे जानने से, गिरने वाले को क्या फ़ायदा पहुंचा।

बस यही हाल उस नेक शख़्स का है कि ख़ुद तो दोज़ख़ से बचने का सामान करता रहा, और दूसरों को दोज़ख़ का मुस्तहिक़ बनता देखते रहा, मगर उन कामों से न रोकना जिनके करने वह दोज़ख़ में नहीं जा रहा है।

यह तरीक़ा ख़ुदग़र्ज़ी की वजह है और ऐसा ख़ुदगर्ज़ शख़्स या क़ौम भी अज़ाब व सज़ा से नहीं बच सकती। जिस तरह से किसी जगह का माहौल ख़राब हो और कोई मर्ज़ आम हो, गंदगी फैले, मगर डॉक्टर या हकीम, न साफ़ रहने की हिदायत करे, न मर्ज़ दूर करने पर ग़ौर करे, ख़ुद बहुत साफ़ रहे, और बीमारी से बचा रहे तो कब तक बचा रह सकेगा जब फ़िज़ा मुक़द्दर और गंदगी होगी। जरासीम फैलेंगे और वह बीमारी डॉक्टर या हकीम के घर पहुंच जाएगी। किसी बस्ती में आग लग जाए, छप्पल जलने लगें, आग फैलने लगे, क़रीब के घर में रहने वाले अपने उस छप्पर को देख कर संतुष्ट रहें, जो आग की लपेट में नहीं आया है, न आग बुझाएं, न बुझाने को कहें, तो आग फैलते–फैलते उस सुरक्षित छप्पर तक पहुंच जाएगी और वह भी जल जाएगा। जो लोग गुनाहों से ख़ुद रुकते हैं लेकिन दूसरों को रोकते नहीं और अपने नेक आमाल पर मुतमईन रहते हैं तो गुनाहों के नतीजे से वह भी सुरक्षित नहीं रख सकते। कुरआन शरीफ के छठे पारे में बनी इस्राईल का ज़िक्र करते हुए ऐसे लोगों का हश्र व अंजाम बताया गया है जो नेकी का हुक्म नहीं देते थे और ख़ुद उसी पर अमल करते रहते थे। उन आयतों का तर्जुमा यह हैः "बनी इस्राईल में जो लोग काफ़िर थे, उन पर लानत की गयी थी। दाऊद अलैहिस्सलाम और ईसा बिन मरियम अलैहिस्सलाम की ज़बान से यह लानत इस वजह से हुई कि उन्होंने हुक्म की मुख़ालिफ़त की और हद से निकल गए, जो बुरा काम उन्होंने कर रखा था, उससे एक दूसरे को मना करते थे, वाक़ई उनका काम बेशक बुरा था।"

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP -19

Issue: 02 FEBRUARY 2019 VOLUME: 11

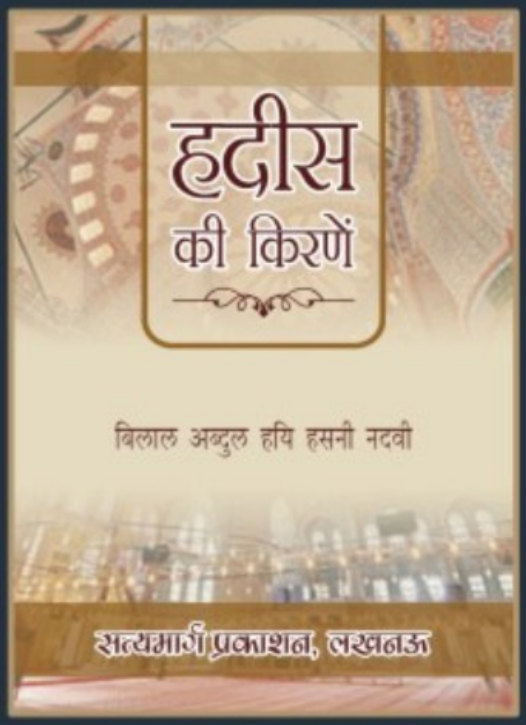

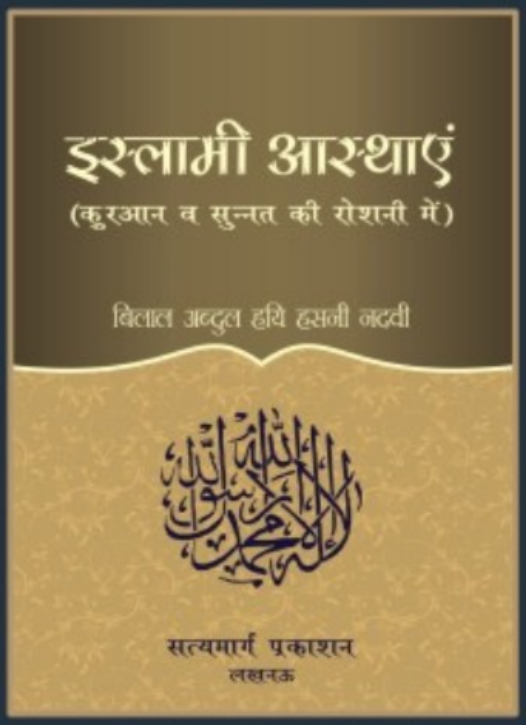

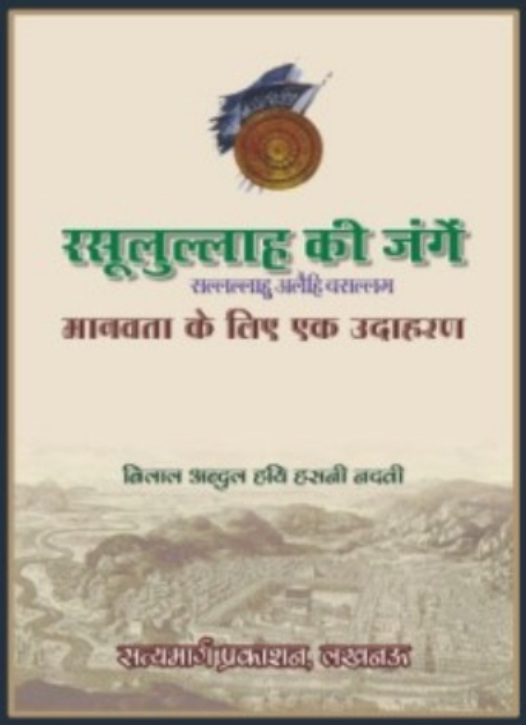

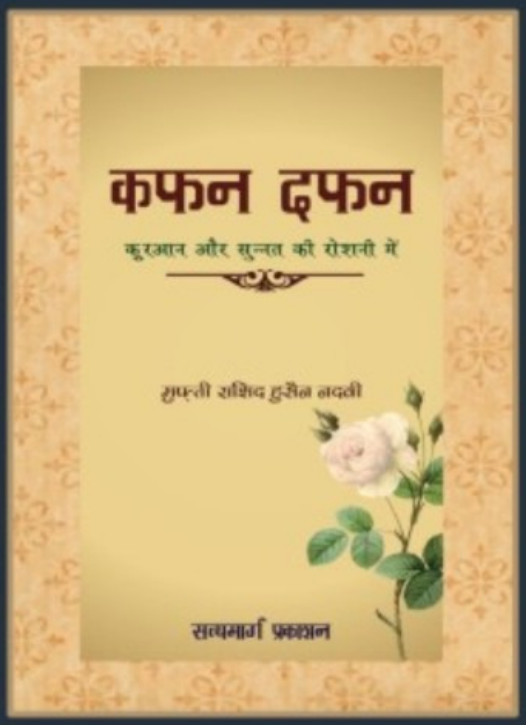

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.